सतना
24 जनवरी 2025 शुक्रवार

दैनिक
मीडियाऑडीटर

सतना, रीवा से एक साथ प्रकाशित

राष्ट्रमंडल खेल 2026...
@ पेज 7

संक्षिप्त समाचार

इराक में अब 9 साल की मासूम बच्चियों की भी हो जाएगी शादी

इराक (एजेंसी)। इराक में बाल विवाह को प्रभावी रूप से वैध कर दिया गया है। इसके तहत दशकों पुराने कानूनों में संशोधन के बाद अब 9 साल की उम्र में लड़कियां विवाह कर सकती हैं। इराक में हुए इस बदलाव के बाद इसके %विनाशकारी प्रभावों% को रोकने के लिए विरोध प्रदर्शन भी शुरू हो गए हैं। देश में विवाह

के लिए पिछली न्यूनतम आयु 18 वर्ष थी। इराक में नए संसोधन के बाद मौलवियों को विवाह, तलाक और बच्चों की देखभाल समेत पारिवारिक मामलों पर फैसला लेने का अधिकार दिया गया है। कानून के सबसे प्रमुख विरोधियों से एक वकील मोहम्मद जुमा ने कहा, हम इराक में महिलाओं और बच्चों के अधिकारों के अंत तक पहुंच चुके हैं। इराकी पत्रकार साजा हाशिम ने कहा, यह तथ्य कि महिलाओं के भाग्य फैसला मौलवियों के हाथ है, मुझे एक महिला के रूप में अपने जीवन में आने वाली हर चीज से डर लगता है। द सन की रिपोर्ट के मुताबिक, महिला अधिकार समूहों ने इन कानूनों के पारित होने को भयावह बताया है। इराक में शादी की उम्र में हुए बदलाव के बाद विरोध भी शुरू हो गया है। प्रदर्शनकारियों का कहना है कि यह इराक के 1959 के व्यक्तिगत स्थिति कानून को कमजोर करता है, जिसने पारिवारिक कानून को एकीकृत किया और महिलाओं के लिए सुरक्षा स्थापित की।

ट्रंप के एक फैसले ने मचाया अमेरिकी गर्भवतियों में हड़कंप

वाशिंगटन (एजेंसी)। अमेरिका के नये राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के एक फैसले ने देश की सभी गर्भवतियों में हड़कंप मचा दिया है। अस्पतालों में समय पूर्व डिलीवरी करवाने के लिए गर्भवतियों की भीड़ लग रही है। इससे डॉक्टर भी हैरान हैं। आखिर ट्रंप ने ऐसा क्या ऐलान कर दिया है, जिससे महिलाएं समय से पहले डिलीवरी करवाने के लिए कुछ भी तकलीफ सहने को तैयार हैं, अमेरिका के गर्भवतियों को ट्रंप ने क्या टेंशन दे दी है, जिससे

उनका चैन-सुकून हराम हो गया है?... आइये आपको पूरा मामला समझाते हैं। दर असल न्यू इमिग्रेशन पॉलिसी के तहत डोनाल्ड ट्रंप ने ऐलान किया है कि अमेरिका में प्रवासियों के लिए जन्म से मिलने वाली नागरिकता का प्रावधान अब खत्म हो जाएगा। यानि इसका सीधा सा मतलब है कि जो लोग अमेरिका में जाकर बस गए हैं या जॉब कर रहे हैं, अगर उनको कोई बच्चा होता है तो अब उसे अमेरिकी नागरिकता नहीं मिलेगी। इससे पहले अमेरिका में जन्मे बच्चे को वहां की नागरिकता आसानी से मिल जाती थी, उसके माता-पिता चाहे जिस देश के नागरिक हों। मगर ट्रंप ने राष्ट्रपति पद की शपथ लेते ही ये बड़ा ऐलान कर दिया। इससे खलबली मची है। अमेरिकी गर्भवतियां अस्पतालों में जाकर डॉक्टरों से समय से पूर्व यानि प्री-मेच्योर डिलीवरी करवाने के लिए निवेदन कर रही हैं। वह सभी 20 फरवरी से पहले ही अपने बच्चे को जन्म देना चाहती हैं। इसके पीछे की वजह यह है कि डोनाल्ड ट्रंप का जन्म से नागरिकता नहीं मिलने वाला कानून आगामी 20 फरवरी से लागू हो जाएगा। ऐसे में जो बच्चे 20 फरवरी के बाद पैदा होंगे, उन्हें अब अमेरिका की नागरिकता नहीं मिलेगी।

ट्रेन की छत पर चढ़ा शख्स, 11 केवी की जिंदा तार से चिपका

ओडिशा (एजेंसी)। रायगड़ा रेलवे स्टेशन पर एक दर्दनाक हादसा हो गया। मालगाड़ी पर चढ़ा एक शख्स हाई वोल्टेज करंट की तार से टच हो गया और पलक झपकते आग का गोला बनकर नीचे गिर गया। झुलसने की वजह से इलाज के दौरान शख्स की मौत हो गई। घटना का वीडियो सामने आया है, जिसे देखकर आप भी सहम जाएंगे। घटना मंगलवार सुबह की है।
शख्स करंट लगने से अपनी जान गंवा बैठा। मृतक की पहचान नरसिंह कांडा के रूप में हुई है, जिनकी उम्र 55 साल बताई जा रही है, जो ओडिशा के नुआपाड़ा जिले के बदनाला गांव के निवासी थे। जानकारी के अनुसार, नरसिंह कांडा अपने परिवार के साथ सिकंदरपुर में मजदूरी का काम करने गए थे। स्वास्थ्य में गिरावट आने के कारण उन्होंने घर लौटने का फैसला किया था।

मंगलवार सुबह करीब 10 बजे नरसिंह, प्लेटफार्म नंबर- 5 पर एक मालवाहन ट्रेन की बोगी पर चढ़ने की कोशिश कर रहे थे। इस दौरान कुछ लोगों ने उन्हें चेतावनी भी दी, लेकिन उन्होंने अपनी कोशिश जारी रखी। नरसिंह जैसे मालगाड़ी की खुली बोगी पर चढ़े तो उनका हाथ ऊपर उठ गया और वह 1चिङ्क की एक जिंदा तार से टकरा गए, जिससे उन्हें जबरदस्त करंट लग गया। इसकी वजह से उन्हें गंभीर जलन और चोटें आईं। वह मालगाड़ी की बोगी के नीचे गिर गए। रेलवे सुरक्षा बल के अधिकारियों ने तुरंत उनकी मदद की और उन्हें रायगड़ा जिला मुख्यालय अस्पताल में भर्ती कराया। हालांकि, इलाज के दौरान उनकी मौत हो गई। तत्र्क्कने उनके मोबाइल फोन को जब्त किया और उनके परिवार को इस दुखद घटना की जानकारी दी। नरसिंह की पत्नी और बेटा भी सिकंदरपुर से वापस लौट रहे थे, जिन्हें इस हादसे के बारे में बताया गया।

पराक्रम दिवस पर देशवासियों से पीएम मोदी की अपील, बोले-

'विकसित भारत के लिए एकजुट होना होगा'

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत के महान स्वतंत्रता सेनानी नेताजी सुभाष चंद्र बोस की जयंती के अवसर पर हर साल 23 जनवरी को पराक्रम दिवस के रूप में मनाया जाता है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भी गुरुवार को पराक्रम दिवस के मौके पर नेताजी सुभाष चंद्र बोस को श्रद्धांजलि अर्पित की। पीएम मोदी ने कहा कि नेताजी ने जिस भारत की कल्पना की थी हम उसी भारत के निर्माण की दिशा में काम कर रहे हैं। बता दें कि साल 2021 में केंद्र सरकार ने नेताजी सुभाष चंद्र बोस के जन्मदिन 23 जनवरी को पराक्रम दिवस के रूप में मनाने का ऐलान किया था।
पीएम मोदी ने गुरुवार को कहा कि नेताजी सुभाष चंद्र बोस के आदर्श और भारत की स्वतंत्रता के प्रति उनका अटूट समर्पण हमें प्रेरित करता रहता है। पीएम मोदी ने संविधान सदन (पुराने संसद भवन) के सेंट्रल हॉल में नेताजी सुभाष चंद्र बोस के चित्र पर पुष्पांजलि भी अर्पित की। इस दौरान पीएम मोदी के साथ-साथ

लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला, राज्यसभा में विपक्ष के नेता और कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह समेत कई अन्य केंद्रीय मंत्री और सांसद उपस्थित थे।
पीएम मोदी का छात्र-छात्राओं संग संवाद
संविधान सदन के सेंट्रल हॉल में नेताजी सुभाष चंद्र बोस की जयंती पर स्कूली छात्र-छात्राओं को भी आमंत्रित किया गया था। पीएम मोदी ने इस दौरान जाकर उनसे संवाद भी किया और नेताजी से जुड़े सवाल भी पूछे। पीएम मोदी ने छात्र-छात्राओं के साथ संवाद का वीडियो सोशल मीडिया पर शेयर किया है।

भाजपा नेता रमेश बिधूड़ी ने आतिशी के खिलाफ दर्ज कराई शिकायत

नई दिल्ली (एजेंसी)। कालकाजी विधानसभा सीट से भाजपा उम्मीदवार रमेश बिधूड़ी ने दिल्ली की मुख्यमंत्री और आप उम्मीदवार आतिशी के खिलाफ शिकायत दर्ज कराई है। इस शिकायत में कहा गया है कि आतिशी झूठी शिकायतें दर्ज करा रही हैं और प्रशासन पर अनुचित दबाव डालने की कोशिश कर रही हैं। आतिशी और रमेश बिधूड़ी दोनों कालकाजी मंदिर विधानसभा सीट से चुनाव लड़ रहे हैं और एक दूसरे पर हमले कर रहे हैं। कुछ दिन पहले रमेश बिधूड़ी ने कांग्रेस नेता प्रियंका गांधी को लेकर विवादित टिप्पणी की थी। इस बयान को लेकर उनका जमकर विरोध हुआ था। इसके बाद उन्होंने अपने बयान को लेकर खेद प्रकट किया था। रमेश बिधूड़ी अपने विवादित बयानों के लिए जाने जाते हैं। लोकसभा में उन्होंने सदन के अंदर विपक्षी सांसद के प्रति अपशब्दों का प्रयोग किया था। इसके बाद भी वह विवादों में रहे थे। ऐसे में जब उन्हें लोकसभा चुनाव में टिकट नहीं मिला तो यह माना गया था कि विवादित बयानों के कारण उनका पत्ता कटा है।

टीचर चाचा के घर आया, खाना खाया, आधी रात को दो मासूम बहनों का गला रेतकर किया कत्ल

उत्तर प्रदेश के हाथरस से हत्या की सनसनीखेज वारदात

हाथरस (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश के हाथरस से हत्या की सनसनीखेज वारदात सामने आई है। हाथरस कोतवाली सदर क्षेत्र के आशीर्वाद धाम कॉलोनी में रिश्ते के भतीजे ने अपने साथी के साथ मिलकर टीचर चाचा और उनके परिवार पर हमला किया। उसने टीचर चार की दो बेटियों का गला रेतकर हत्या कर दी। 7 वर्षीय मासूम और उसकी बहन की चचेरे भाई ने धारदार हथियार से हत्या कर दी। बचाव करने पहुंची चाची और बीमार चाचा पर भी युवक ने हमला किया।
दरअसल, छोटे लाल गौतम धाम कॉलोनी में रहते हैं। वो मीतई स्थित जवाहर स्मारक इंटर कॉलेज में प्रवक्ता के पद पर तैनात हैं। साल 2018 में छोटे लाल पैरालाइज्ड हो गए। उनके घर पर उनके रिश्ते का भतीजा विकास अक्सर आया जाया करता था। 22 जनवरी की रात करीब 9 बजे छोटे लाल गौतम का रिश्ते का भतीजा अपने एक साथी के साथ घर आया। खाना खाकर सभी लोग सो गए।
आरोप है कि रात करीब 1 बजे रिश्ते के भतीजे विकास ने अपने साथी के साथ मिलकर छोटे लाल गौतम की दोनों बेटी की धारदार हथियार से गला रेतकर कर हत्या कर दी। इसके साथ ही छोटे लाल गौतम और उनकी पत्नी गौरी गौतम पर भी हमला

बोल दिया। पत्नी के शोर करने पर विकास और उसका साथी फरार हो गया।
घटना की जानकारी होने पर एसपी हाथरस, एसएसपी और सीओ के साथ मौके पर पहुंचे। पुलिस ने घायलों को अस्पताल में भर्ती कराया और मृतक दोनों बहनों के शवों को पोस्टमार्टम के लिए भेजा। पुलिस अधीक्षक चिरंजीव नाथ सिन्हा ने बताया कि इस मामले मुकदमा दर्ज किया जा रहा है।

मनाली विंटर कार्निवल में लड़के की हत्या

कांच की बोतल से गला रेता; लोग उठा रहे थे प्रोग्राम का लुत्फ

मनाली (एजेंसी)। हिमाचल प्रदेश के मनाली में विंटर कार्निवल के दौरान 19 वर्षीय युवक की हत्या कर दी गई। पुलिस ने बताया कि आरोपी को गिरफ्तार कर लिया गया है। मरने वाले की पहचान मनाली के वशिष्ठ निवासी दक्ष्य के रूप में हुई है। यह घटना बुधवार रात मनु रंगशाला के मंच के पीछे हुई, जब सैकड़ों लोग सांस्कृतिक कार्यक्रम का आनंद ले रहे थे। घटना के बाद घाटी में सनसनी फैल गई है। दरअसल, कुल्लू की पर्यटन नगरी मनाली में इन दिनों विंटर कार्निवाल चल रहा है। बुधवार रात को कार्निवाल के दौरान मनु रंगशाला में प्रोग्राम चल रहा था और बैकस्टैज पर एक युवक की हत्या कर दी गई। पुलिस के अनुसार, आरोपी ने बहस के बाद टूटी हुई कांच की बोतल से मृतक के गले पर हमला किया। मृतक का पोस्टमार्टम कर लिया गया है और रिपोर्ट का इंतजार किया जा रहा है। हत्याकांड में पुलिस ने एक युवक को गिरफ्तार किया है। पुलिस अब यह जांच कर रही है कि दोनों के बीच ऐसी क्या बात हुई, जिसके चलते दक्ष्य की कांच की बोतल मारकर हत्या कर दी गई।

पुलिस ने क्या कहा? कुल्लू के पुलिस अधीक्षक कार्तिकेयन गोकुलचंद्रन ने बताया कि आरोपी को गुरुवार तड़के गिरफ्तार कर लिया गया। उन्होंने कहा कि घटना के पीछे के कारणों की जांच की जा रही है। सूचना मिलने के तुरंत बाद ही पुलिस मौके पर पहुंची और घायल को सिविल अस्पताल लेकर गई। इसके बाद पुलिस ने पीड़त के परिजनों को सूचना दी।

परिजनों ने दी शव के साथ प्रदर्शन की चेतावनी: मृतक के चाचा श्याम लाल ने बुधवार रात मीडिया से बातचीत में कहा था कि यदि गुरुवार तक आरोपी को गिरफ्तार नहीं किया गया, तो वे मृतक का शव मनाली चौक पर रखकर विरोध प्रदर्शन करेंगे और मनाली के लोग सड़कों पर उतरेंगे। पुलिस ने मामला दर्ज कर लिया है और आगे की जांच जारी है।

पश्चिम बंगाल के बॉर्डर पर बंकर बना रहा बांग्लादेश

किसानों को गोली मारने की दे रहा धमकी

मालदा (एजेंसी)। बांग्लादेश अपनी हरकतों से बाज नहीं आ रहा है। पहले बॉर्डर पर कई जगह भारत की ओर से किए जा रहे बाड़ लगाने के काम को रोका वहीं अब वह भारत से लगती सीमा पर बंकर बना रहा है। बांग्लादेश ने पश्चिम बंगाल के मालदा जिले के सुखदेवपुर गांव के पास सीमा के 0 प्वाइंट पर बंकर बनाया है। भारतीय किसानों की शिकायत है कि बॉर्डर गार्ड बांग्लादेश ने बंकर बनाया और हथियारों के साथ वहीं रह रहे हैं। जब भारतीय किसान बीएसएफ के साथ फेंसिंग लगाने का काम करने जाते हैं तो बांग्लादेश की तरफ से आपत्ति जताई जाती है। बीजीबी की ओर से गोली मारने की दी धमकी भी दी जाता है। किसानों का कहना है कि वे खेती का काम ठीक तरीके से नहीं कर पा रहे हैं। उनका यह भी कहना है कि बंकर में बैठे बीजेबी के जवान बांग्लादेशियों को भारत की जमीन पर लगी फसल को काटने के लिए उत्साहित करते हैं। इससे तनाव बढ़ता है।

दरअसल, शेख़ हसीना ने अगस्त में बांग्लादेश छोड़ दिया और फिर बांग्लादेश में अस्थिरता शुरू हो गई। बांग्लादेश की अंतरिम सरकार कई बार भारत विरोधी बयान दे चुकी है। इससे भारत-बांग्लादेश सीमा भी कई बार तनाव की स्थिति बनी है। बांग्लादेश पश्चिम बंगाल से सटे 2217 किलोमीटर क्षेत्र में हर जगह फेंसिंग या कंटीले तार लगाने के काम को रोक रहा है। बांग्लादेश जानता है कि भारत की सीमा पर फेंसिंग लगाने से बांग्लादेशी तस्करों को दिक्कत होगी। इसलिए बांग्लादेश उन्हें बचाने के लिए फेंसिंग लगाने का काम पूरा नहीं होने दे रहा है। इससे पहले भारत-बांग्लादेश सीमा पर पिछले शनिवार को सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) की सीमा चौकी के नजदीक दोनों देशों के किसानों के बीच कहासुनी के बाद हुई संक्षिप्त झड़प की वजह से तनाव पैदा हो गया था। बीएसएफ और उसके बांग्लादेशी समकक्ष बॉर्डर गार्ड बांग्लादेश (बीजीबी) ने तत्काल हस्तक्षेप किया और जल्द ही स्थिति को नियंत्रित कर लिया। बीएसएफ के मुताबिक यह घटना पूर्वाह्न करीब 11:45 बजे हुई जब अंतरराष्ट्रीय सीमा के पास काम कर रहे भारतीय किसानों ने बांग्लादेशी किसानों पर फसल चोरी करने का आरोप लगाया। कहासुनी ने जल्द ही उग्र रूप ले लिया और दोनों पक्षों के किसान बड़ी संख्या में एकत्र हो गए, एक-दूसरे को गालियां देने लगे और एक-दूसरे पर पत्थरबाजी करने लगे थे।

जलगांव रेल हादसे में चार विदेशियों की भी हो गई मौत

जलगांव (एजेंसी)। महाराष्ट्र के जलगांव में बुधवार को दर्दनाक रेल हादसा हुआ। पुष्पक एक्सप्रेस ट्रेन में आग लगने की अफवाह के बाद कई यात्री ट्रेन से बाहर पटरी पर कूद गए जिसके बाद दूसरी ओर से आ रही कर्नाटक एक्सप्रेस ट्रेन ने उन्हें कुचल डाला। इस हादसे में अब तक 13 लोगों की मौत हो चुकी है और कई घायलों का इलाज अब भी जारी है। वहीं, अब जानकारी सामने आई है कि इस रेल हादसे में जिन 13 लोगों की मौत हुई है उनमें 4 लोग नेपाल के नागरिक हैं। हादसे के एक

दिन बाद गुरुवार को अधिकारियों ने जानकारी दी है कि जलगांव ट्रेन हादसे में मारे गए 13 लोगों में से चार की पहचान नेपाल के नागरिक के रूप में हुई है। मृतकों में एक लड़का और दो महिलाएं शामिल हैं। अधिकारियों ने बताया है कि अब तक 13 में से आठ शवों की पहचान कर ली गई है। इनमें से दो मृतकों की पहचान उनके आधार कार्ड से की गई है। जलगांव के जिला सूचना अधिकारी ने बताया है कि मरने वाले आठ लोगों में से चार नेपाल के रहने वाले थे।
मृतक नेपालियों की पहचान सामने आई: अधिकारियों की ओर से दी गई लिस्ट के मुताबिक, ट्रेन हादसे में जिन 4 नेपाली नागरिकों की मौत हुई है उनकी पहचान 43 साल की नवीन भंडारी (मुंबई के कोलाबा में रहती थीं), 60 साल की जवाकला भाटे (ठाणे के भिवंडी में रहती थीं), 40 साल के लच्छीराम खटारू पासी और एक 11 साल के नाबालिग बच्चे के रूप में हुई है।

महाकुंभ में दिव्यांगों को मिल रहे कृत्रिम अंग, मरीजों को दी जा रही फिजियोथेरेपी

प्रयागराज (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश के प्रयागराज में महाकुंभ का भव्य आयोजन किया गया है। यहां भारी संख्या में श्रद्धालु आकर त्रिवेणी घाट पर स्नान कर रहे हैं। इस दौरान लोगों को खाना

● विभिन्न धार्मिक समूहों के शिविरों के बीच दिव्यांगों को राहत

खिलाना हो या उनको कंबल बांटने, कई सामाजिक काम भी किए जा रहे हैं। इस बी कई दिव्यांग लोग मुफ्त में इलाज और कृत्रिम अंगों के प्रत्यारोपण के लिए भी महाकुंभ पहुंच रहे हैं। विभिन्न धार्मिक समूहों के शिविरों के बीच दिव्यांगों को राहत पहुंचाने के मकसद से काम करने वाली जयपुर की

धर्मार्थ संस्था नरवन सेवा संस्थान ने भी यहां एक शिविर लगाया है। शिविर में आने वाले दिव्यांगों के डॉक्टरों द्वारा देखभाल की जा रही है और एक टीम दिव्यांगों के लिए कृत्रिम अंगों को बनाने का माप लेने में लगी हुई है। इस संस्थान को पोलियो प्रभावित मरीजों के उपचार और उनके पुनर्वास संबंधी परोपकारी सेवाओं के लिए भी जाना जाता है। उत्तर प्रदेश के बलिया निवासी जयशंकर कुमार के दोनों पैर दो साल पहले गंभीर संक्रमण के कारण काटने पड़े थे और अब वह नई उम्मीद के साथ महाकुंभ पहुंचे हैं। उन्होंने 'पीटीआई-भाषा' से कहा, ''अपने दोनों पैर खोने के बाद मैं बैसाखी के सहारे चलता हूं। चिकित्सकों ने सुझाव दिया कि मैं कृत्रिम अंग लगा सकता हूं, लेकिन वो महंगे हैं और मैं उनका खर्च नहीं उठा सकता। जब हमें पता चला कि ये अंग यहां मुफ्त में उपलब्ध होंगे, तो मैंने अपने परिवार के साथ कुंभ जाने का फैसला किया। हम यहां स्नान भी करेंगे।'' उन्होंने कहा कि मुझे 10 दिन तक इंतजार करने के लिए कहा गया है और उसके बाद मुझे कृत्रिम अंग लगा दिए जाएंगे। तबतक मैं फिजियोथेरेपी ले रहा हूं, जो शिविर में मुफ्त में दी जा रही है। महाकुंभ का आयोजन हर 12 साल बाद होता है। इस बार के महाकुंभ की खासा अहमियत है। 45 दिनों तक चलने वाले इस महाकुंभ में अबतक 9 करोड़ से ज्यादा श्रद्धालु आस्था की डुबकी लगा चुके हैं। शिविर के 'प्रोस्थेटिक ऑर्थोपेडिक' विशेषज्ञ क्रुणाल चौधरी के अनुसार, कुंभ में चिकित्सकों, 'फिजियोथेरेपी' विशेषज्ञों, 'प्रोस्थेटिक्स' विशेषज्ञों, तकनीशियनों के साथ 'फैब्रिकेशन' दल सहित 50 लोगों की एक टीम तैनात की गई है।

राजभवन अवलोकन के लिए प्रवेश गेट नंबर- 2 से मिलेगा

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल के निर्देशानुसार गणतंत्र दिवस के उपलक्ष्य में राजभवन 25 जनवरी से 27 जनवरी 2025 तक आमजन के लिए खोला जा रहा है। 3 दिनों की अवधि में राजभवन प्रवेश गेट नंबर- 2 से निर्धारित किया गया है। आगंतुकों का निकास भी गेट नंबर- 2 से ही होगा। राजभवन अवलोकन के लिए आने वाले आगंतुकों के वाहनों की पार्किंग मिंटो हॉल परिसर में होगी। राज्यपाल के अपर मुख्य सचिव श्री के.सी. गुप्ता ने बताया कि नागरिकों को 25 और 27 जनवरी को दोपहर 2 बजे से शाम 7 बजे तक और गणतंत्र दिवस 26 जनवरी, 2025 को प्रातः 11 बजे से दोपहर 2 बजे तक राजभवन भ्रमण की अनुमति होगी। राजभवन अवलोकन के लिए निर्धारित अवधि में भ्रमण रूट, गेट नंबर- 2 से प्रवेश के साथ प्रारम्भ होगा। इस रूट पर सांदीपनि सभागार स्थित उपहार गैलरी, संविधान में आर्ट एन्ड कैलीग्राफी पर आधारित प्रदर्शनी, संविधान निर्माण सभा के प्रमुख व्यक्तित्व और संविधान सभा में मध्यप्रदेश की हस्तियों की परिचय प्रदर्शनी होगी। आगंतुक माण्डु पार्किंग के पास स्थित ऐतिहासिक तोप, प्रेस प्रकोष्ठ के पास पंचतंत्र उद्यान, वैक्वेंट हॉल, और सुन्दर-सजीले उद्यान का अवलोकन कर सकेंगे। आगंतुकों के लिए ओपन थिएटर की व्यवस्था भी की गई है। जिसमें जनजातीय नायकों और अमर शहीदों की गौरव गाथा सहित विकास की झलक दिखाने वाली लघु फिल्म दिखाई जाएगी।

वित्त मंत्री देवड़ा विषय-विशेषज्ञों से करेंगे संवाद

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। भारत को विकसित राष्ट्र बनाने और अर्थव्यवस्था को 5 ट्रिलियन इकोनॉमी बनाए जाने के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के संकल्प को पूरा करने मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में राज्य सरकार कृत संकल्पित है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए और आम जनता से जुड़ी हुई विभिन्न सुविधाओं को प्रदान करने के लिए वित्त विभाग बजट की तैयारी कर रहा है। इसमें विभिन्न क्षेत्रों जैसे बैंकिंग, ग्रामीण- विकास, जनजाति, आर्थिक एवं वाणिज्यिक, जेंडर बजट, पर्यावरण के विशेषज्ञों से सुझाव प्राप्त करने गुरुवार को बजट पर संवाद होगा। आर.सी.व्ही.पी नरोन्हा प्रशासन एवं प्रबंधकीय अकादमी भोपाल में सुबह 10:30 बजे से होने वाले बजट पर संवाद में उप मुख्यमंत्री एवं वित्त मंत्री श्री जगदीश देवड़ा विभिन्न क्षेत्रों के विषय विशेषज्ञों के साथ चर्चा कर आगामी बजट को अधिकाधिक जनोपयोगी और प्रभावशाली बनाए जाने के लिए बहुमूल्य सुझाव प्राप्त करेंगे। बजट पर संवाद कार्यक्रम में बैंकिंग, अर्थशास्त्र, वित्त आयोग, उद्योग क्षेत्र के विशेषज्ञों के साथ-साथ विभिन्न क्षेत्रों जैसे कृषि, उद्यान, चिकित्सा, चार्टर्ड एकाउंटेंसी, फिल्म, में सफलता पूर्वक कार्य कर रहे हितधारकों को भी सुझाव देने के लिये आमंत्रित किया जा रहा है। आम जनता से समाचार पत्रों, सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म दूरभाष (0755-2700800), ई-मेल व पत्राचार के माध्यम से उनके सुझाव प्राप्त किए जा रहे हैं। इससे विकास की राह पर निरंतर आगे बढ़ रहे मध्यप्रदेश के आगामी बजट में अपने सुझावों के माध्यम से सहभागिता निभाकर प्रदेश की प्रगति और समृद्धि में आम जनता भी अपना योगदान दे सकेगी। अभी तक हजारों की संख्या में सुझाव प्राप्त हो चुके हैं।

सतत विकास लक्ष्यों पर केपेसिटी बिल्डिंग वर्कशाप

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल में दो दिवसीय केपेसिटी बिल्डिंग वर्कशाप ऑन मानीटरिंग फ्रेमवर्क ऑफ स्स्टेनेबल डेवलपमेंट गोल्स कंपाइलेशन ऑफ इनवायरमेंट एकाउंट्स एण्ड जेण्डर स्टैटिस्टिक्स का आयोजन किया जा रहा है। यह कार्यक्रम मिनिस्ट्री ऑफ स्टैटिस्टिक्स एंड प्रोग्राम इंप्लीमेंटेशन और मध्यप्रदेश राज्य नीति आयोग के संयुक्त तत्वावधान में होगा। वर्कशाप 23-24 जनवरी को कुशाभाऊ ठाकरे अंतर्राष्ट्रीय कन्वेशन हॉल में सुबह 10 बजे शुरू होगी। उद्घाटन-सत्र में उप मुख्यमंत्री श्री जगदीश देवड़ा, मुख्य सचिव श्री अनुराग जैन, प्रमुख सचिव योजना श्री संजय कुमार शुक्ल, संयुक्त राष्ट्र के भारत में रेजिडेंट कोऑर्डिनेटर श्री शोंबी शार्प, महानिदेशक (सेंट्रल स्टैटिस्टिक्स) श्री एन. के. संतोषी, सचिव डॉ. सौरभ गर्ग और सहायक महानिदेशक श्री एस.सी. मलिक शामिल होंगे। यह कार्यशाला एक महत्वपूर्ण पहल है जो सतत विकास लक्ष्यों , पर्यावरणीय आँकड़ों, और जेंडर स्टैटिस्टिक्स के सुदृढ़ीकरण में मददगार साबित होगी। कार्यशाला का उद्देश्य राज्यों और जिलों के प्रशासनिक अधिकारियों को सतत विकास लक्ष्यों की निगरानी, पर्यावरणीय आँकड़ों और जेंडर स्टैटिस्टिक्स के सटीक और प्रभावी उपयोग के लिए प्रशिक्षित करना है। यह न केवल डेटा मॉनिटरिंग और विश्लेषण को मजबूत करेगा, बल्कि नीति निर्माण और क्रियान्वयन में भी सुधार करेगा। यह कार्यशाला एक मंच प्रदान करेगी, जहाँ अधिकारी और विशेषज्ञ अपने अनुभव और रणनीतियों को साझा करेंगे। सतत विकास लक्ष्यों, पर्यावरण और जेंडर स्टैटिस्टिक्स से संबंधित डेटा के उपयोग से नीतियों को और सशक्त बनाया जाएगा। राज्यों और जिलों के प्रशासनिक अधिकारियों को आधुनिक मॉनिटरिंग टूल्स और फ्रेमवर्क्स के बारे में प्रशिक्षित किया जाएगा।

नई दिल्ली में गणतंत्र दिवस परेड में चीता द प्राइड ऑफ इण्डिया की थीम पर केन्द्रित होगी मध्यप्रदेश की झाँकी

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। नई दिल्ली में आयोजित गणतंत्र दिवस परेड-2025 में मध्यप्रदेश की झाँकी चीता द प्राइड ऑफ इण्डिया'' की थीम पर केन्द्रित होगी। झाँकी में मध्यप्रदेश में चीतों की ऐतिहासिक पुनर्स्थापना की झलक दिखेगी। भारत से 70 वर्ष पूर्व चीते विलुप्त हो चुके थे, भारत में चीतों की वापसी का श्रेय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के विज़न को जाता है। प्रदेश में चीता परियोजना की सफलता के साथ अब मध्यप्रदेश टाइगर स्टेट'' और चीता स्टेट'' भी बन गया है।

मध्यप्रदेश के श्योपुर जिले में कूनो नदी के किनारे स्थित राष्ट्रीय कूनो अभयारण्य देश में चीतों का एक नया घर है। अभयारण्य में चीतों के लिये उचित आहार और प्राकृतिक आवास मौजूद हैं। पुनर्स्थापना की सफल परियोजना के परिणाम स्वरूप कूनो में वयस्क और शावक सहित कुल 24 चीते अभयारण्य में विचरण कर रहे हैं।

प्रस्तुत झाँकी में भारत में चीतों के सफल पुनर्स्थापन को दर्शाया गया है। अग्रभाग में

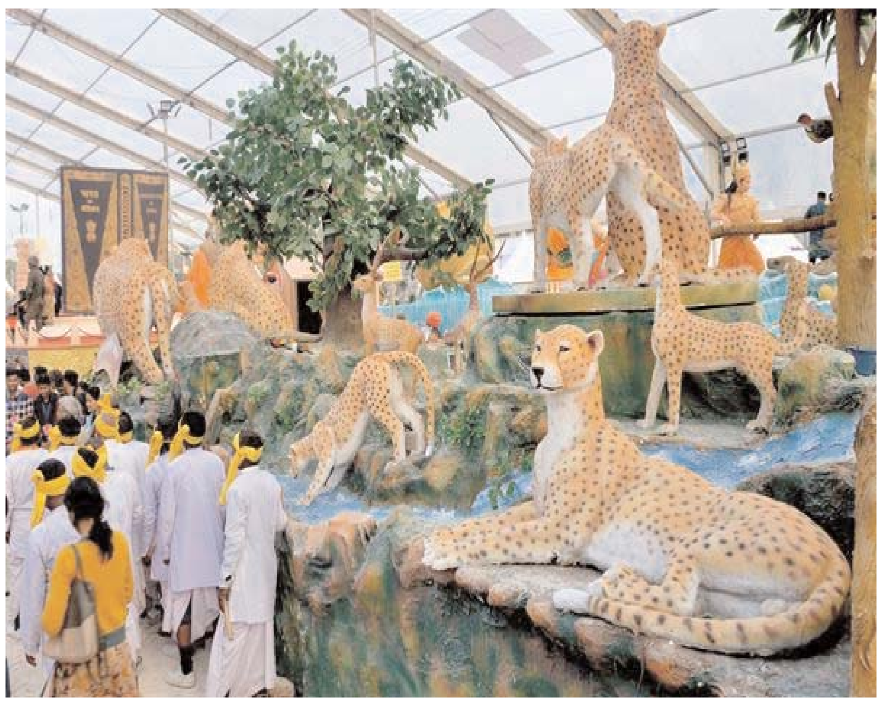

कूनो राष्ट्रीय उद्यान के वयस्क चीतों का जोड़ा और कूनो में जन्मे नन्हें चीता शावकों को दर्शाया गया है। झाँकी के मध्य भाग में बहती हुई कूनो नदी और इसके आसपास राष्ट्रीय उद्यान के वनावरण एवं प्राकृतिक आवास में विचरण करते हुए वन्य-जीव, जिनमें हिरण, बंदर, पक्षी और चीते उनकी बढ़ती हुई संख्या के साथ जैव-विविधता के लिये एक आदर्श के रूप में कूनो अभयारण्य को दर्शाया गया है।

झाँकी के मध्य भाग के पिछले हिस्से में पेड़ के नीचे बैठे चीता मित्र'' स्थानीय निवासियों को चीता संरक्षण के बारे में प्रशिक्षित कर रहे हैं। झाँकी के अंतिम भाग में वनकर्मी वाच-टॉवर से चीतों की निगरानी करते दिखाई दे रहे हैं, जो सफल चीता परियोजना में सक्रिय योगदान दे रहे हैं। झाँकी के दोनों ओर एलईडी पेनल्स के माध्यम से कूनो राष्ट्रीय उद्यान में चीतों पर केन्द्रित फिल्म को भी प्रदर्शित किया जा रहा है। झाँकी के दोनों ओर नृत्य दल श्योपुर जिले का सहरिया जनजाति नृत्य लहंगी'' करते हुए नजर आयेंगे।

पॉवर जनरेटिंग कंपनी जबलपुर के दो कार्यालयों को मिला आईएसओ 9001 सर्टिफिकेशन

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मध्यप्रदेश पॉवर जनरेटिंग कंपनी के मुख्यालय जबलपुर के दो कार्यालयों मुख्य अभियंता उत्पादन भंडार और मुख्य अभियंता संचालन संधारण-जल विद्युत को उत्कृष्ट मानदंडों का पालन करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय क्वालिटी मैनेजमेंट सिस्टम 9001:2015 सर्टिफिकेशन प्राप्त हुआ है। मध्यप्रदेश पॉवर जनरेटिंग कंपनी के दो कार्यालयों को

आईएसओ सर्टीफिकेशन होने पर ऊर्जा मंत्री श्री प्रद्युम्न सिंह तोमर ने कार्यालयों के समस्त अभियंताओं और कार्मिकों को शुभकामना और बधाई दी। उन्होंने अपेक्षा व्यक्त की कि ये कार्यालय भविष्य में भी इसी प्रकार उच्च स्तरीय क्वालिटी मानदंडों का पालन करते हुए कार्य करेंगे। मुख्य अभियंता (उत्पादन भंडार) कार्यालय को इन्वेंटरी प्रबंधन, स्क्रेप मैनेजमेंट तथा केन्द्रीय जीएसटी फाइलिंग के लिये यह प्रमाण-पत्र प्राप्त हुआ। मुख्य अभियंता संचालन एवं संधारण-जल विद्युत कार्यालय को सभी जल विद्युत केन्द्रों के निर्बाध ऑपरेशन, निगरानी एवं मेंटेनेंस के लिए यह सर्टीफिकेट प्राप्त हुआ। दोनों कार्यालय अंतर्राष्ट्रीय स्तर के मानदंडों का पालन करते हुए कार्य कर रहे हैं।

आरडीएसएस के तहत पश्चिम मप्र में लगाए 5400 से ज्यादा ट्रांसफार्मर

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। महू क्षेत्र के आलू उत्पाद किसान हों या खरगौन का मिर्च उत्पादक, बड़वानी के कपास उत्पादक हों या मंदसौर के अफीम उत्पादक किसान सभी इस बात से संतुष्ट एवं खुश हैं कि उन्हें अब बिजली अच्छे वोल्टेज के साथ नियामानुसार 10 घंटे मिल रही है। यह सब हुआ है शासन की रिवेम्प्ड डिस्ट्रिब्यूशन सेक्टर स्कीम के बाद इस योजना के तहत मालवा और निमाड़ में अब तक 5400 से ज्यादा अतिरिक्त ट्रांसफार्मर लगाए गए हैं। इस किसानों को सिंचाई कार्य में पहले से ज्यादा सुविधा मिल रही है।

मध्यप्रदेश पश्चिम क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी इंदौर की प्रबंध निदेशक सुश्री रजनी सिंह ने बताया कि ऊर्जा मंत्री श्री प्रद्युम्न सिंह तोमर के निर्देशानुसार विद्युत विकास एवं वितरण क्षमता वृद्धि के कार्य समय पर गुणवत्ता के साथ किए जा रहे हैं। रिवेम्प्ड डिस्ट्रिब्यूशन सेक्टर स्कीम के अंतर्गत भी प्रत्येक जिले में अतिरिक्त वितरण ट्रांसफार्मर लगाए गए हैं। इससे किसानों को पहले की तुलना में ज्यादा अच्छी बिजली मिल रही हैं। ज्यादा हॉर्स पावर की मोटर लगाने के बाद भी कोई परेशानी नहीं आ रही है। इससे एक ओर जहां विद्युत व्यवधान अत्यंत कम हो गए हैं, वहीं किसानों की मोटर जलने, पानी नहीं मिलने से फसलों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ने की नौबत नहीं आई। सुश्री रजनी सिंह ने बताया कि इंदौर, उज्जैन, रतलाम, धार, देवास, खरगौन और मंदसौर जिलों में अपेक्षाकृत किसान ज्यादा हैं।

ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट 2025 के सफल आयोजन के लिए अपर मुख्य सचिव की अध्यक्षता में गठित होगी समिति

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मुख्य सचिव श्री अनुराग जैन ने बुधवार को मंत्रालय में ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट 2025 की तैयारियों की विस्तृत समीक्षा की। मुख्य सचिव श्री जैन ने समिट के सफल आयोजन एवं समन्वय के लिए अपर मुख्य सचिव की अध्यक्षता में समिति गठित करने के निर्देश दिये। समिति में लोक निर्माण, उद्योग, नगरीय प्रशासन, पर्यटन एवं ऊर्जा विभाग के प्रमुख सचिव सदस्य होंगे।

मुख्य सचिव श्री जैन ने कहा कि समिट के दौरान स्थायी प्रकृति के कार्य भी किये जायें, जिसमें खर्च की पुनरावृत्ति नहीं हो सकेगी। आमंत्रित अतिथि प्रदेश एवं विशेषकर भोपाल एवं

आसपास की सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक विरासत को समझ सकें ऐसी व्यस्थाएँ की जाये। स्वच्छ एवं हरित भोपाल की अवधारणा पर कार्य किया जाये।

बैठक में ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट की तैयारियों के लिए प्रधानमंत्री के प्रोटोकाल, इंदौर-भोपाल एयरपोर्ट की व्यवस्थाएं, स्टेट हेंगर, चार्टर्ड प्लेन, मीडिया प्लान, आमंत्रित अतिथियों की सूची, यातायात व्यवस्था, स्ट्रीट लाईट सहित अतिथियों के ठहरने की व्यवस्था आदि की जानकारी दी गयी। बैठक में अपर मुख्य सचिव मुख्यमंत्री कार्यालय डॉ. राजेश राजौरा, अपर मुख्य सचिव श्री के.सी.गुप्ता, अपर मुख्य सचिव श्री नीरज मण्डलोई, प्रमुख सचिव श्री संजय कुमार शुक्ल, कमिश्नर भोपाल श्री संजीव सिंह, पुलिस कमिश्नर भोपाल श्री हरिनारायणचारी मिश्र एवं भोपाल कलेक्टर श्री कौशलेन्द्र विक्रम सिंह उपस्थित थे।

एक्सट्रा हाई टेंशन सब-स्टेशन अब रिमोट से होंगे संचालित

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। एम.पी. ट्रांसको (मध्यप्रदेश पावर ट्रांसमिशन कंपनी) ने नवाचार करते हुये प्रदेश के कुछ चुनिन्दा 132 के.व्ही. ए.आई.एस (एक्सट्रा हाई टेंशन एयर इंसूलेटेड स्विच गेयर सबस्टेशनों) को रिमोट से संचालित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम आगे बढ़ाया है। ऊर्जा मंत्री श्री प्रद्युम्न सिंह तोमर ने बताया कि एम.पी. ट्रांसको के जबलपुर स्थित 132 के.व्ही. सबस्टेशन माढ़ोताल को रिमोट से नियंत्रण और संचालित किये जाने के कार्य का पहला चरण पूरा कर लिया गया है। ऊर्जा मंत्री श्री तोमर और अपर मुख्य सचिव श्री नीरज मंडलोई ने इस सफलता के लिए एम पी ट्रांसको को बधाई दी है। श्री तोमर ने बताया कि यह प्रदेश का पहला ऐसा पुराना ए.आई.एस (एयर इंसूलेटेड स्विच गेयर) सबस्टेशन है जिसे मानवरहित आपरेशन करने की तकनीक के तहत रिमोट (नजदीक के 220 के व्ही सबस्टेशन जबलपुर) से नियंत्रित और संचालित किया जायेगा। इस माह सेवानिवृत्त हो रहे अतिरिक्त मुख्य अभियंता श्री एस. व्ही. वझे ने 220 के. व्ही. सबस्टेशन जबलपुर से रिमोट आपरेशन का पहला क्लिक किया। पुराने सबस्टेशनों को रिमोट (मानव रहित सबस्टेशन) से संचालित करने का कार्य प्रयोग के तौर पर किया जा रहा है। जबलपुर ऐसा पहला सबस्टेशन है जहां इस प्रोजेक्ट का पहला चरण पूरा कर लिया गया है। अन्य सबस्टेशनों में भोपाल का 132 के.व्ही. सबस्टेशन अयोध्या नगर और इंदौर में 132 के.व्ही. सत्यसांई सबस्टेशन शामिल हैं। इन्हें मानवरहित आपरेशन (रिमोट) से संचालित करने का कार्य प्रगति पर है। एस.ए.एस. (सबस्टेशन ऑटोमेशन सिस्टम) के इन सब स्टेशनों को एम.पी. ट्रांसको में नई टेक्नालॉजी के एडॉप्शन के तहत बनाया गया है।

सदा रहने वाला ब्रह्म मैं हूँ, पंचभूतों का जगत मैं नहीं हूँ -महामंडलेश्वर परमानंद गिरि

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। आचार्य शंकर सांस्कृतिक एकता न्यास, संस्कृति विभाग मप्र शासन द्वारा प्रयागराज महाकुंभ के सेक्टर 18 हरिश्चंद्र मार्ग स्थित एकात्म धाम शिविर बुधवार को वेदांत की दिव्यता और संगीत की मधुरता से भरपूर रहा। राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र न्यास के न्यासी सदस्य युग पुरुष महामंडलेश्वर परमानंद गिरि जी ने वेदांत और उपनिषदों की गूढ़ व्याख्या प्रस्तुत की। उन्होंने कहा, सदा रहने वाला ब्रह्म मैं हूँ, पंचभूतों का जगत मैं नहीं हूँ। जो सभी अवस्थाओं में प्राप्त है, वही ध्यान करने योग्य है। साथ ही उन्होंने एकात्म धाम प्रकल्प की भूरि-भूरि प्रशंसा की और

आचार्य शंकर के अद्वैत दर्शन और उनके योगदान का अवलोकन किया।

आज एक ओंकार साउंड्स ऑफ़ वननेस के चौथे दिवस पर सुप्रसिद्ध गायिका द्वय रंजनी गायत्री ने अपनी मधुर आवाज़ में आचार्य शंकर विरचित निर्वाण षट्कम, दक्षिणामूर्ति स्तोत्रम्, आदि का गायन प्रस्तुत किया। उनकी प्रस्तुति ने श्रोताओं को अद्वैत के सुरों से सराबोर कर दिया। इस आयोजन में अनेक साधु-संतों की उपस्थिति ने इसे और भी विशेष बना दिया। आचार्य महामंडलेश्वर विशोकानंद भारती ने अद्वैत वेदांत के मर्म पर प्रकाश डालते हुए कहा, प्रक्रिया में द्वैत स्वीकार्य हो सकता है, किंतु प्रक्रिया की पूर्णता अद्वैत में ही है। भगवत्पाद शंकराचार्य ने 'सौंदर्य लहरी' के माध्यम से शक्ति को अभिव्यक्त किया। उन्होंने राम ब्रह्म व्यापक जग जाना चौपाई के माध्यम से रामायण में अद्वैत वेदांत की प्रासंगिकता को समझाया।

सायबर सुरक्षा में प्रशिक्षित युवा सायबर सुरक्षा दूत की तरह कार्य करें-महिला बाल विकास मंत्री सुश्री भूरिया

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। सायबर क्राइम आज के दौर का नवीनतम और खतरनाक क्राइम हो गया है। वर्तमान में आधुनिक तकनीक का गलत इस्तेमाल हो रहा है। सायबर क्राइम से बचने का एकमात्र तरीका जागरूकता और सतर्कता है। महिला बाल विकास मंत्री सुश्री निर्मला भूरिया बुधवार को भोपाल के समन्वय भवन में 9वीं नेशनल साइबर साइकोलॉजी कॉन्फ्रेंस के एक दिवसीय कार्यशाला के शुभारंभ पर सम्बोधित कर रही थी। मंत्री सुश्री भूरिया ने कहा कि म.प्र. राज्य महिला आयोग और रिस्पॉन्सिबल नेटिज्म संस्था मुम्बई के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य

युवाओं में साइबर वेलनेस के बारे में जागरूकता एवं सुरक्षित डिजिटल परिदृश्य को बढ़ावा देना है। उन्होंने कहा कि यह कार्यशाला सायबर अपराधों से समाज को सुरक्षित करने का अभिनव प्रयास है। मोबाईल के बढ़ते उपयोग से लोगों के काम तो आसान हुए है। लेकिन कहीं न कही इससे उनकी सुरक्षा पर भी सवाल खडें हुए है। सायबर क्राइम के सबसे ज्यादा सॉफ्ट टारगेट बुजुर्ग, महिला और बच्चें है।

मंत्री सुश्री भूरिया ने कहा कि महिला बाल विकास विभाग का लक्ष्य बच्चों, युवाओं और महिलाओं को सायबर सुरक्षित बनाना है। इससे न केवल सायबर वेलनेस को बढ़ावा मिलेगा बल्कि युवाओं में ऑनलाइन संकट को रोकने की क्षमता को विकसित किया जा सकेगा। उन्होंने कहा कि युवतियों और महिलाओं के विरूद्ध बढ़ते सायबर अपराधों पर अंकुश लगाने के उद्देश्य से उज्जैन के विक्रम विश्वविद्यालय परिसर में भारत का 卐पहला सायबर वेलनेस सेल卐 लांच किया गया है।

पत्नी ने प्रेमी के साथ मिलकर पति को मार डाला, अंतिम सांस तक डंडों से पीटते रहे, दोनों आरोपी फरार

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। सीधी जिले के जमोड़ी थानाक्षेत्र में भेलकी गांव में गुरुवार सुबह करीब 4 बजे पत्नी और उसके प्रेमी ने मिलकर पति की हत्या कर दी। पुलिस ने शव को पोस्टमॉर्टम के जिला अस्पताल भेजा। जिसके बाद शव को पोस्टमॉर्टम के बाद परिजनों को सौंप दिया गया। परिजनों ने शाम करीब 6 बजे अंतिम संस्कार कर दिया है। आरोपियों के खिलाफ केस दर्जकर पुलिस तलाश में जुट गई है।

मृतक दिलीप कोल के बड़े भाई रतन कोल ने बताया कि उनकी भाभी नीतू कोल ने रात में बच्चों को खाना खिलाने के बाद छत के रास्ते अपने प्रेमी राजेश कोल के घर जाकर उससे मिली। इसी दौरान पति दिलीप वहां पहुंच गए और दोनों को आपत्तिजनक हालत में देख लिया। नाराज दिलीप ने पत्नी के साथ मारपीट शुरू कर दी, लेकिन इसी बीच पत्नी नीतू और उसके प्रेमी राजेश जो रिश्ते में चचेरा देवर लगता है।

दोनों ने मिलकर दिलीप पर डंडों से हमला कर दिया। साथ ही पीटते-पीटते दिलीप को बड़े रतन के घर तक ले गए। इस दौरान दिलीप के सिर से अधिक खून बहने के कारण घटनास्थल पर ही मौत हो गई। हत्या के बाद पत्नी नीतू अपने प्रेमी राजेश के साथ फरार हो गई है।

दिलीप और नीतू की है दो बेटियां: जानकारी के अनुसार, दिलीप और नीतू की शादी को लगभग 15 साल हो गए थे। दोनों से दो बेटियां हैं जहां पहले बेटी 11 साल की और दूसरी बेटी 2 साल की है। दोनों बेटियों को छोड़ नीतू अपने आशिक के साथ भाग गई है।

वहीं पूरे मामले में जमोड़ी थाना प्रभारी दिव्य प्रकाश त्रिपाठी ने बताया कि मौत की सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंच गई थी, जहां शव को कब्जे में लेकर पोस्टमॉर्टम के लिए भेजा गया था। वहां से पोस्टमॉर्टम के बाद परिजनों को सौंप दिया गया है। परिजनों ने गांव में शव का अंतिम संस्कार कर दिया है।

चोरी का माल खरीदने वाले दो सुनार समेत 6 गिरफ्तार

सिंगरौली में 19 लाख के जेवरात बरामद, सीसीटीवी से पकड़े गए चोर

मीडिया ऑडीटर, सिंगरौली (निप्र)। सिंगरौली पुलिस ने शहर में हुई 10 बड़ी चोरियों का खुलासा करते हुए गुरुवार को छह आरोपियों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने चोरी गए 19 लाख रुपए मूल्य के सोने-चांदी के जेवरात बरामद किए हैं। इनमें चोरी का माल खरीदने वाले दो सुनार भी शामिल हैं।

एसपी मनीष खत्री ने बताया कि: मामले का खुलासा 17 जनवरी को पचखोरा निवासी शिव प्रसाद मिश्र की शिकायत से हुआ। वे 15 जनवरी को बनारस गए थे। लौटने पर उन्होंने घर का ताला टूटा और आभूषण, नगदी गायब पाई। नगर पुलिस अधीक्षक पीएस परस्ते और बैढ़न कोतवाली प्रभारी अशोक सिंह परिहार के नेतृत्व में गठित विशेष टीम ने 22 जनवरी को मुख्य आरोपी अनुज दुबे को गिरफ्तार किया। उसकी निशानदेही पर राम जी बसोर, रामधारी बसोर और दो सुनार - सुरेश सोनी और कृष्णा राम सोनी को पकड़ा गया। घटनास्थल और आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज ने अपराधियों की पहचान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

1 साल में शहर में 10 बड़ी चोरियां की: पुलिस जांच में पता चला कि गिरोह ने पिछले एक साल में शहर के विभिन्न इलाकों में 10 बड़ी चोरियां की थीं। इनमें पचखोरा, नौगढ़, डीएवी रोड बैढ़न, हाउस बोर्ड कॉलोनी और बेलौजी क्षेत्र की वारदातें शामिल हैं। चोरी का माल खरीदने वाले सुनारों की गिरफ्तारी से स्पष्ट हुआ कि वे चोरों के साथ मिलीभगत कर चोरी के जेवरात खरीद रहे थे।

पुलिस अधीक्षक ने बताया कि आरोपी सूने घरों को अपना निशाना बनाते थे। दिन में घूम-घूम कर आरोपी पहले सूने मकान को चिह्नित करते थे। उसके बाद रात में चोरी की वारदात को अंजाम देते थे।

175 ग्राम सोने के जेवर बरामद: आरोपियों के पास से पुलिस ने 175 ग्राम सोने के जेवर और सिक्के, तीन किलो चांदी के जेवर, अन्य सामान और घटना में इस्तेमाल की गई एक बाइक और हथियार जब्त किया है। जिसकी कीमत 19 लाख रुपए है।

ओलंपियाड परीक्षा का दूसरा चरण

कुसमी मॉडल स्कूल में 649 विद्यार्थियों ने परीक्षा दी

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। मध्य प्रदेश के सीधी जिले में स्कूली बच्चों की प्रतिभा को निखारने के लिए ओलंपियाड परीक्षा का दूसरा चरण कुसमी के शासकीय मॉडल उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में संपन्न हुआ। 22 और 23 जनवरी 2025 को आयोजित इस ओएमआर आधारित परीक्षा में कक्षा 2 से 8 तक के कुल 649 विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया।

जिला शिक्षा अधिकारी और जिला परियोजना समन्वयक के मार्गदर्शन में आयोजित परीक्षा में पहले दिन 302 और दूसरे दिन 347 विद्यार्थियों ने भाग लिया। कुसमी विकास खंड में शत-प्रतिशत उपस्थिति दर्ज की गई, जिसमें दूर-दराज के क्षेत्रों से भी बच्चे और अभिभावक पहुंचे। बीआरसीसी अंगिरा प्रसाद द्विवेदी ने भोजन व्यवस्था का प्रबंधन किया। कार्यक्रम की सफलता में जन शिक्षक, प्रधानाध्यापक, शिक्षक और कार्यालयीन कर्मचारियों भी मौजूद रहे।

पन्ना जिला जेल में सजा काट रहे कैदी की मौत

अस्पताल में इलाज के दौरान दम तोड़ा, परिजनों ने जेल प्रशासन पर लगाए हत्या के आरोप

मीडिया ऑडीटर, पन्ना (निप्र)। पन्ना जिला जेल में गुरुवार को सजा काट रहे एक कैदी की मौत हो गई है। कैदी की आज अचानक तबीयत खराब होने पर जेल प्रशासन ने जिला अस्पताल में भर्ती कराया था। जहां पर इलाज के दौरान उसने दम तोड़ दिया। घटना की सूचना पर परिजन मौके पहुंचे। उन्होंने प्रशासन पर हत्या का आरोप लगाया है। शव का अधिकारियों की मौजूदगी में पोस्टमॉर्टम कराया गया है। मामले में पुलिस जांच कर रही है।

विवाद मामले में कोर्ट ने दोषी पाया: मृतक कैदी बहादुर सिंह राजपूत सिमरिया थानाक्षेत्र के दनवारा गांव का निवासी है। जो बीते एक साल से पन्ना जिले जेल में विवाद के एक मामले में सजा काट रहा था। जिला विशेष न्यायालय ने 27 दिसंबर 2024 को विवाद में मामले में दोषी करार देते हुए एक वर्ष की सजा सुनाई थी।

इधर, जेलर राजेंद्र मिश्रा का कहना है कि कैदी की तबीयत खराब होने पर तत्काल इलाज की व्यवस्था की गई थी। अधिकारियों की मौजूदगी में मृतक का पोस्टमॉर्टम कराया गया है। मामले की जांच जारी है।

दो जगह से नशीली दवा पकड़ी

चार तस्कर गिरफ्तार, बोलेरो और 61 हजार रुपए नकदी भी जब्त

मीडिया ऑडीटर, अनूपपुर (निप्र)। अनूपपुर कोतवाली पुलिस ने ऑपरेशन प्रहार के तहत बुधवार देर रात अवैध नशीली कोडीनयुक्त कफ सिरप के कारोबार का भंडाफोड़ किया। पुलिस ने दो अलग-अलग कार्रवाई में 151 शीशी कफ सिरप, एक बोलेरो गाड़ी और 61,000 रुपए नकद के साथ चार आरोपियों को गिरफ्तार किया है।

पहली कार्रवाई में रात करीब 1:30 बजे सामतपुर हर्री रोड स्थित पंप हाउस के पास से संतोष राठौर (44) और उनकी पत्नी उमावती राठौर (44) को गिरफ्तार किया गया। इनके पास से 33 शीशी विसेरेक्स कफ सिरप (प्रत्येक 100 एमएल बरामद की गई, जिसकी कीमत 16,500 रुपए है।

पूछताछ के बाद पुलिस ने दूसरी कार्रवाई में रात करीब 2:00 बजे मानपुर तिराहे पर बोलेरो (एमपी 18 टी 3743) को रोका। वाहन से उमाशंकर पांडे (55) और उनके बेटे राहुल पांडे (33) को गिरफ्तार किया गया। उनके पास से विंग बायोटेक एलएलपी कंपनी की ओनेरेक्स कफ सिरप की 118 शीशियां (कीमत 59,000 रुपए), 61,000 रुपए नकद और 4 लाख रुपए कीमत की बोलेरो जब्त की गई।

एसपी अनूपपुर मोती उर रहमान ने नशे कारोबार में लिप्त अपराधी उमाशंकर पांडे के खिलाफ जिलाबदर की कार्रवाई किए जाने व नशा सामग्री के परिवहन में प्रयुक्त बोलेरो वाहन राजसात के लिए निर्देशित किया है।

सभी आरोपियों के खिलाफ नारकोटिक्स एक्ट और मध्य प्रदेश ड्रग कंट्रोल एक्ट के तहत मामला दर्ज किया गया है। यह कार्रवाई नशीली दवाओं के अवैध कारोबार पर अंकुश लगाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बहरी के प्राचार्य को हटाया गया

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। जिला शिक्षा अधिकारी डॉ. प्रेमलाल मिश्र द्वारा आदेश जारी कर शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बहरी के प्रभारी प्राचार्य श्याम सुन्दर तिवारी उच्च माध्यमिक शिक्षक को प्राचार्य पद से पृथक करते हुये संस्था में द्वितीय वरिष्ठताधारी हिमांचल सिंह उच्च माध्यमिक शिक्षक को अग्रिम आदेश तक के लिये प्रभारी प्राचार्य के पद पर कार्य करने की अनुमति दी गई है।

जिला शिक्षा अधिकारी ने बताया कि विद्यालय के छात्रों को संबल राशि वापस नहीं करने के संबंध में शिकायत सहित प्राचार्य के विरुद्ध अन्य शिकायतें प्राप्त हुई थी। कलेक्टर महोदय के निर्देशानुसार तीन सदस्यीय जांच दल का गठन कर शिकायतों की जांच की गई।

जांच दल की रिपोर्ट के आधार पर उक्त कार्यवाही की गई है। उन्होंने बताया कि श्याम सुन्दर तिवारी के विरूद्ध विभागीय जॉच संस्थित कर आरोप पत्रादि पृथक से जारी किये जायेंगे।

डिप्टी सीएम बोले-विधायक विकास की बात करें, इसमें क्या बुराई

रीति पाठक ने मंच से कहा था, रीवा से निकलकर सीधी में भी विकास करिए

मीडिया ऑडीटर, भोपाल/सीधी (निप्र)। डिप्टी सीएम राजेंद्र शुक्ल ने भाजपा विधायक रीति के पाठक के बयान पर तीन दिन बाद जवाब दिया है। उन्होंने कहा कि विधायक ने जो कुछ भी कहा था, वो विकास की बात को लेकर था, इसमें कोई बुराई नहीं है।

दरअसल, भाजपा विधायक रीति पाठक ने विकास के लिए जारी 7 करोड़ की गायब होने की बात कही थी। उन्होंने कहा था कि इस संबंध में स्वास्थ्य विभाग को पत्र लिखे थे, लेकिन कोई जवाब नहीं आया।

डिप्टी सीएम शुक्ल ने कहा- इससे आपको समझना चाहिए कि बीजेपी के विधायक विकास को लेकर कितने संवेदनशील और समर्पित हैं। हर विधायक चाहते हैं कि हमारे क्षेत्र में ज्यादा से ज्यादा काम हो।

डिप्टी सीएम ने कहा: स्वास्थ्य और अन्य क्षेत्रों में विकास को लेकर जो बात कही उसमें बुराई क्या है? मंच पर हो या मंच के बाहर हो, अगर कोई विधायक अपने क्षेत्र के विकास को लेकर अपनी बात कह रहा है, उसे हम हमेशा सकारात्मक भाव से लेते हैं और पता करते हैं कि जो बातें बता रही हैं उसका पैसा मंजूर हुआ है या नहीं हुआ है। इसे पता कराते हैं। इसमें कोई बुराई नहीं है।

भाजपा विधायक ने डिप्टी सीएम को ये कहा था: दरअसल, सीधी में रविवार को भाजपा विधायक रीति पाठक ने भरे मंच पर अपनी ही पार्टी के सीनियर लीडर और उपमुख्यमंत्री राजेंद्र शुक्ल को घेर लिया था। उन्होंने आरोप लगाया कि अस्पताल के विकास के लिए जारी 7 करोड़ रुपए की राशि गायब हो गई। इसे लेकर स्वास्थ्य विभाग को 6 से 7 बार पत्र लिखा, लेकिन उपमुख्यमंत्री की ओर से कोई जवाब नहीं मिला।

उस वक्त मंच पर डिप्टी सीएम राजेंद्र शुक्ल भी मौजूद थे। वह स्वास्थ्य विभाग के मंत्री भी हैं।

विधायक रीति पाठक ने स्वास्थ्य सुविधाओं को लेकर गंभीर सवाल उठाए थे। उन्होंने ये भी आरोप लगाया कि हेल्थ डिपार्टमेंट उनके क्षेत्र की समस्याओं पर ध्यान नहीं देता है। रीति पाठक ने डिप्टी सीएम से यहां तक कह दिया कि रीवा से निकलकर सीधी में भी विकास करिए।

अपर कलेक्टर तथा अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक ने की गणतंत्र दिवस समारोह के तैयारियों की समीक्षा

छत्रसाल स्टेडियम का निरीक्षण कर दिए आवश्यक निर्देश

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। गणतंत्र दिवस समारोह के गरिमामय आयोजन के संबंध में अपर कलेक्टर अंशुमन राज तथा अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक अरविन्द श्रीवास्तव द्वारा छत्रसाल स्टेडियम का निरीक्षण किया गया। उन्होंने समारोह स्थल की साफ सफाई, समतलीकरण, पार्किंग व्यवस्था, सुरक्षा व्यवस्था, बैठक व्यवस्था, विद्युत व्यवस्था आदि के विषय में सभी सम्बन्धित अधिकारियों से जानकारी प्राप्त की तथा निर्देशित किया है कि सभी संबंधित अधिकारी दिए गये दायित्वों का पूरी गम्भीरता से पालन करना सुनिश्चित करें।

इस अवसर पर उपखण्ड अधिकारी गोपद बनास नीलेश शर्मा, तहसीलदार गोपद बनास जान्हवी शुक्ला, नायब तहसीलदार एकता शुक्ला, टीआई कोतवाली अभिषेक उपाध्याय, यातायात प्रभारी रीता त्रिपाठी, सहायक यंत्री बी के तिवारी सहित संबंधित अधिकारी कर्मचारी उपस्थित रहे।

ट्रैफिक पुलिस का 98 वाहनों पर चालान

50 हजार से ज्यादा का जुर्माना लगा, स्कूल बसों की भी जांच

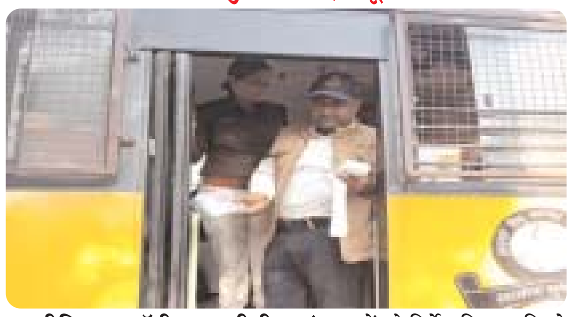

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। सीधी जिले में ट्रैफिक पुलिस ने अवैध पार्किंग के दो दिनों में पुलिस ने 98 वाहनों पर कार्रवाई करते हुए 50 हजार रुपए से अधिक का जुर्माना वसूला है। यातायात थाना प्रभारी रीता त्रिपाठी के नेतृत्व में गुरुवार को शहर का निरीक्षण किया गया। इस दौरान सड़कों पर अवैध रूप से खड़े दोपहिया और चौपहिया वाहनों पर कार्रवाई की गई। प्रति चार पहिया वाहन पर 3 से 4 हजार रुपए का चालान काटा गया।

यातायात पुलिस ने बस संचालकों को निर्देश दिए गए कि वे बसों में क्षमता से अधिक बच्चे न बैठाएं और सभी आवश्यक दस्तावेज पूरे रखें, जिससे विद्यार्थियों को कोई परेशानी न हो।

एसपी ने बताया कि: यह कार्रवाई शहर की यातायात व्यवस्था को सुधारने के लिए की गई है। जो लोग शहर में जाम की स्थिति पैदा करेंगे, उनके खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाएगी। पुलिस ने चालान काटने के साथ-साथ लोगों को यातायात नियमों का पालन करने की समझाइश भी दी है।

गेहूं उपार्जन के लिए पंजीयन शुरू

20 जनवरी से 31 मार्च तक चलेगी प्रोसेस, सुविधाजनक व्यवस्था के निर्देश

मीडिया ऑडीटर, अनूपपुर (निप्र)। अनूपपुर जिले में रबी विपणन वर्ष 2024-25 के लिए समर्थन मूल्य पर गेहूं उपार्जन का पंजीयन कार्य शुरू हो गया है। कलेक्टर हर्षल पंचोली ने मंगलवार को कलेक्ट्रेट के नर्मदा सभागार में हुई बैठक में अधिकारियों को जिले के सभी किसानों का पंजीयन सुनिश्चित करने के निर्देश दिए।

कलेक्टर ने जिले में पंजीयन केंद्रों की संख्या बढ़ाने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने जिला आपूर्ति अधिकारी को नए पंजीयन केंद्रों के प्रस्ताव भेजने को कहा है। साथ ही समिति प्रबंधकों को पटवारियों से गेहूं बोनी के रकबे की जानकारी लेकर सभी पात्र किसानों का पंजीयन कराने के निर्देश दिए गए हैं। बैठक में खरीफ उपार्जन से जुड़े लंबित भुगतानों को शीघ्र निपटाने पर भी जोर दिया गया। इसमें किसानों द्वारा बेचे गए धान की राशि, परिवहन व्यय और समितियों/स्वयं सहायता समूहों के श्रम व्यय का भुगतान शामिल है।

बैठक में जिला आपूर्ति अधिकारी बालेंद्र सिंह परिहार, उप संचालक कृषि एन.डी. गुप्ता और सहकारिता विभाग की उपायुक्त सुनीता गोठवाल सहित अन्य संबंधित अधिकारी उपस्थित थे। गेहूं उपार्जन के दौरान किसानों की सहायता के लिए एक कंट्रोल रूम की स्थापना भी की जाएगी।

आज पन्ना पहुंचे सागर कमिश्नर

सिमरिया तहसील का निरीक्षण किया, स्कूली बच्चों के साथ मिड-डे मील खाया

मीडिया ऑडीटर, पन्ना (निप्र)। सागर संभाग के कमिश्नर डॉ. वीरेंद्र सिंह रावत ने गुरुवार को पन्ना का एक दिवसीय दौरा किया। उन्होंने सबसे पहले सिमरिया तहसील कार्यालय का निरीक्षण किया, जहां तहसीलदार से लंबित प्रकरणों की जानकारी लेकर उन्हें जल्द ही निपटाने के निर्देश दिए।

इसके बाद दोपहर करीब 12:30 बजे कमिश्नर ने लुधनी पंचायत की बावड़ी के जीर्णोद्धार काम का जायजा लिया। इसके बाद सिमरिया गांव की आंगनबाड़ी और पुरैना हाईस्कूल में पहुंचकर बच्चों के साथ मध्यान्ह भोजन किया। झरकुआ स्थित गोशाला का निरीक्षण करते हुए उन्होंने गौशाला संचालक समूह से चर्चा की। इसके साथ ही गायों की बेहतर देखभाल के लिए आवश्यक दिशा-निर्देश दिए।

कार्यक्रम में पन्ना कलेक्टर सुरेश कुमार, जिला पंचायत सीईओ संघप्रिय और डीपीसी अजय गुप्ता सहित अन्य अधिकारी मौजूद रहे। कमिश्नर के दौरे का अंतिम चरण केन-बेतवा लिंक परियोजना के तहत अमानगंज तहसील के विस्थापित कूड़न गांव का दौरा था। इसके बाद उन्होंने कलेक्ट्रेट में जिला अधिकारियों के साथ बैठककर शाम 5 बजे छतरपुर के लिए प्रस्थान करेंगे।

विचार

भगवान राम से बड़ा नहीं है महाकुम्भ

हम मनुष्यों की एक सामान्य सी आदत है कि दुख की घड़ी में विचलित हो उठते हैं और परिस्थितियों का कसूरवार भगवान को मान लेते हैं। भगवान को कोसते रहते हैं कि हे भगवान हमने आपका क्या बिगाड़ा जो हमें यह दिन देखना पड़ रहा है। गीता में श्री कृष्ण ने कहा है कि जीव बार-बार अपने कर्मों के अनुसार अलग-अलग योनी और शरीर प्राप्त करता है। यह सिलसिला तब तक चलता है जब तक जीवात्मा परमात्मा से साक्षात्कार नहीं कर लेता। इसलिए जो कुछ भी संसार में होता है या व्यक्ति के साथ घटित होता है उसका जिम्मेदार जीव खुद होता है। संसार में कुछ भी अपने आप नहीं होता है। हमें जो कुछ भी प्राप्त होता है वह कर्मों का फल है। इश्वर तो कमल के फूल के समान है जो संसार में होते हुए भी संसार में लिप्त नहीं होता है। ईश्वर न तो किसी को दुख देता है और न सुख। इस संदर्भ में एक कथा प्रस्तुत है? गौतमी नामक एक वृद्धा ब्राह्मणी थी। जिसका एक मात्र सहारा उसका पुत्र था। ब्राह्मणी अपने पुत्र से अत्यंत स्नेह करती थी। एक दिन एक सर्प ने ब्राह्मणी के पुत्र को डंस लिया। पुत्र की मृत्यु से ब्रह्मणी व्याकुल होकर विलाप करने लगी। पुत्र को डंसने वाले सांप के ऊपर उसे बहुत प्रोध आ रहा था। सर्प को सजा देने के लिए ब्राह्मणी ने एक सपेरे को बुलाया। सपेरे ने सांप को पकड़ कर ब्राह्मणी के सामने लाकर कहा कि इसी सांप ने तुम्हारे पुत्र को डंसा है, इसे मार दो। ब्राह्मणी ने संपरे से कहा कि इसे मारने से मेरा पुत्र जीवित नहीं होगा। सांप को तुम्ही ले जाओ और उचित समझो सो करो। संपेरा सांप को जंगल में ले आया। सांप को मारने के लिए संपेरे ने जैसे ही पत्थर उठाया, सांप ने कहा मुझे क्यों मारते हो, मैंने तो वही किया जो काल ने कहा था। संपेरे ने काल को ढूंढा और बोला तुमने सर्प को ब्राह्मणी के बच्चे को डंसने के लिए क्यों कहा। काल ने कहा ब्राह्मणी के पुत्र का कर्म फल यही था। मेरा कोई कसूर नहीं है। सपेरा कर्म के पहुंचा और पूछा तुमने ऐसा बुरा कर्म क्यों किया। कर्म ने कहा मुझ से क्यों पूछते हो, यह तो मरने वाले से पूछो मैं तो जड़ हूं। इसके बाद संपेरा ब्राह्मणी के पुत्र की आत्मा के पास पहुंचा। आत्मा ने कहा सभी ठीक कहते हैं। मैंने ही वह कर्म किया था जिसकी वजह से मुझे सर्प ने डंसा, इसके लिए कोई अन्य दोषी नहीं है। महाभारत के युद्ध में अर्जुन ने भीष्म को बाणों से छलनी कर दिया और भीष्म पितामह को बाणों की शैय्या पर सोना पड़ा। इसके पीछे भी भीष्म पितामह के कर्म का फल ही था। बाणों की शैय्या पर लेटे हुए भीष्म ने जब श्री कृष्ण से पूछा, किस अपराध के कारण मुझे इसे तरह बाणों की शैय्या पर सोना पड़ रहा है। इसके उत्तर में श्री कृष्ण ने कहा था कि, आपने कई जन्म पहले एक सर्प को नागफनी के कांटों पर फेंक दिया था। इसी अपराध के कारण आपको बाणों की शैय्या मिली है। इसलिए कभी भी जाने-अनजाने किसी भी जीव को नहीं सताना चाहिए।

भारत के भविष्य को लेकर नेताजी सुभाषचंद्र बोस की दृष्टि

प्रह्लाद सबनानी

जब नेताजी सुभाषचंद्र बोस के विचारों को भारत के तात्कालीन समकक्ष राजनैतिक नेताओं ने स्वीकार नहीं किया तब नेताजी सुभाषचंद्र बोस ने भारत के भविष्य को लेकर अपनी दूरदृष्टि को धरातल पर लाने के उद्देश्य से अपने कार्य को न केवल भारत बल्कि अन्य देशों में निवास कर रहे भारतीयों के बीच में फैलाने का प्रयास किया। उन्होंने इन देशों में निवासरत भारतीयों को एकत्रित कर उन्हें सैनिक प्रशिक्षण देना प्रारभ किया और इस कार्य में उन्हें अपार सफलता भी मिली यौंकि 29 दिसबर 1943 को अंडमान द्वीप की राजधानी पोर्टलेयर में नेताजी सुभाषचंद्र बोस ने राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा लहरा दिया था। भारतीय इतिहास में भारत भूमि का यह हिस्सा प्रथम आजाद भूभाग माना जाता है। हालांकि, भारत को आजादी मिलने की घोषणा 15 अगस्त 1947 को हुई थी।

नेताजी के रूप में लोकप्रिय सुभाष चंद्र बोस एक प्रखर राष्ट्रवादी, एक प्रभावी वक्ता, एक कुशल संगठनकर्ता, एक विद्रोही देशभक्त और भारतीय इतिहास के सबसे महान स्वतंत्रता सेनानियों में से एक थे। उन्हें ब्रिटिश सरकार के खिलाफ निर्णायक युद्ध लड़ने और 21 अक्तूबर 1943 को एक स्वतंत्र सरकार बनाने का श्रेय दिया जाता है। वर्ष 1927 में नेताजी को भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के महासचिव के रूप में नियुक्त किया गया और उन्होंने भारतीय स्वतंत्रता के लिए कांग्रेस के साथ काम किया, लेकिन समय के साथ कांग्रेस में उपजी गुटबाजी और गांधी जी के साथ वैचारिक मतभेदों के कारण वह कांग्रेस से अलग हो गए और एक स्वतंत्र संगठन के माध्यम से ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध सशस्त्र स्वतंत्रता संग्राम लड़ा। नेताजी भारतीय इतिहास में अपने समय के सबसे सम्मानित नेताओं में से एक थे। वह असीम देशभक्त और भारत के विकास और भविष्य के बारे में अत्यंत कृतसंकल्प थे। सुभाष चंद्र बोस का जन्म 23 जनवरी 1897 को बंगाल प्रांत के कटक, उड़ीसा संभाग में प्रभावती दत्त बोस और अधिवक्ता जानकीनाथ बोस के एक बंगाली कायस्थ परिवार हुआ था। उनके प्रारंभिक प्रभावों में उनके हेडमास्टर, बेनी माधव दास और स्वामी विवेकानंद और रामकृष्ण परमहंस की शिक्षाएं शामिल थीं। बाद में 15 वर्षीय बोस में आध्यात्मिक चेतना जग गई थी।

नेताजी की विचारधारा और व्यक्तित्व के बारे में कई व्याख्याएं उपलब्ध हैं लेकिन अधिकांश विद्वानों का मानना है कि हिंदू आध्यात्मिकता ने उनके व्यस्क जीवन के दौरान उनके राजनीतिक और सामाजिक विचारों का आवश्यक हिस्सा बनाया, हालांकि इसमें कट्टरता या रूढ़िवाद की भावना नहीं थी। खुद को समाजवादी कहने वाले नेताजी का मानना था कि भारत में समाजवाद का मूल स्वामी विवेकानंद के विचार है। आपका मानना था कि 'भगवदगीता' अंग्रेजों के खिलाफ संघर्ष की प्रेरणा का एक बड़ा स्रोत है। सार्वभौमिकता पर स्वामी विवेकानंद की शिक्षाओं, उनके राष्ट्रवादी विचारों और सामाजिक सेवा और सुधार पर उनके जोर ने नेताजी को उनके बहुत छोटे दिनों से प्रेरित किया था। इस संदर्भ में नेताजी के कई उद्धरण आज भी याद किए जाते हैं। मात्र अडिग राष्ट्रवाद और पूर्ण न्याय और निष्पक्षता के आधार पर ही भारतीय स्वतंत्र सेना का निर्माण किया जा सकता है।; यह अकेला रक्त है जो स्वतंत्रता की कीमत चुका सकता है। तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूंगा!; वर्ष 1939 की शुरुआत में उनके द्वारा गढ़ा गया नारा था – ब्रिटेन की कठिनाई भारत का अवसर है।

नेताजी ने अपने प्रारम्भिक जीवनकाल से ही अपने चिंतन और अपनी कार्यशैली से भारत को स्वाधीन और सशक्त हिंदू राष्ट्र बनाने की दिशा मे कदम बढाया था। भविष्य दृष्टा और राजनीतिज्ञ होने के नाते नेताजी का विश्वास था कि राष्ट्र जागरण और राष्ट्र निर्माण की प्रक्रियाओ को साथ लेकर ही आगे बढ़ना चाहिए। नेताजी की स्पष्ट सोच थी कि स्वतंत्र भारत, सार्वभौम संप्रभुता युक्त शक्तिशाली और विश्ववंद्य होना चाहिये तथा सदियो तक पुन:परतंत्रता न आये, ऐसे प्रयास राजनैतिक स्वतंत्रता प्राप्त होने के साथ ही प्रारम्भ होने चाहिए और इसीलिए भारत के नागरिकों में राष्ट्रीयता का भाव जगाना चाहिए।

स्वाधीन भारत की सुरक्षा के लिये नेताजी सेना के तीनो अंगों, थल सेना, जल सेना और नभ सेना का आधुनिक ढंग से निर्माण और विकास करना चाहते थे। जब वे द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान दूसरी बार जर्मनी गये थे तब नेताजी ने यूरोप के कई देशों का दौरा करके आधुनिक युद्ध प्रणाली का गहराई के साथ अध्ययन किया, इतना ही नही उन्होने जर्मनी मे युद्ध बंदियों और स्वतंत्र नागरिको की जो आजाद हिंद फौज बनाई, उसे पूर्ण रूप से आधुनिक अस्त्र-शस्त्रो से सुसज्जित किया और उसे इस प्रकार का प्रशिक्षण दिलाया कि वह संसार की सर्व शक्तिमान सेनाओं के समकक्ष मानी जाने लगी। आजाद हिंद फौज दुनिया के फौजी इतिहास का एक सफल अध्याय बन गया।

ब्रिटिश शासन काल मे भारत के तात्कालिक राजनैतिक नेतृत्व के पास भारत के आर्थिक विकास, सामाजिक एवं सांस्कृतिक ताने बाने के सम्बंध में अपनी कोई दूरदृष्टि नहीं थी। येन केन प्रकारेण केवल राजनैतिक स्वतंत्रता प्राप्त करना एकमेव लक्ष्य था। ऐसे समय में भारत में देश का शासनतंत्र ब्रिटिशों के हाथों में था। अंग्रेजी शासकों की इच्छा अनुसार ही भारत में शासन चलता था। इसलिये, तत्कालीन ब्रिटिश शासकों की राजनीति की पृष्ठभूमि का उद्देश्य एक ही था कि भारत का अधिक से अधिक शोषण किया जाये एवं भारत की जनता को गुलाम बनाकर, अज्ञानता के अंधेरे मे रखकर, अधिक से अधिक समय तक अपना अधिकार जमाकर रखा जाए। ताकि, भारत सदा सदा के लिये गुलामी की जंजीरो मे जकडा रहे, स्वतंत्र होने का विचार भी न कर सके। परंतु, ऐसी मनोवृत्ती होने के उपरांत भी ब्रिटिशों को भारत से खदेड़ दिया गया। परंतु ब्रिटिश शासकों ने कूटनीतिक चाल चलते हुए भारत का विभाजन हिंदुस्तान एवं पाकिस्तान के रूप में कर दिया। पंडित जवाहरलाल नेहरू और मोहम्मद अली जिन्ना के हाथों मे राजनीति की डोर आ गई। नेताजी के क्रांतिकारी विचारों एवं दूरदृष्टि का उपयोग लगभग नहीं के बराबर ही हो पाया था। जबकि नेताजी के विचारों में दूरदर्शिता थी एवं उनकी भारत के बारे में सोच बहुत ऊंची थी। नेताजी ने भारत के भविष्य के बारे में बहुत उल्लेखनीय योजनाओं पर अपने विचार विकसित कर लिए थे एवं आगे आने वाले समय के लिए इस संदर्भ में योजनाएं भी बना ली थी।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व भारत मे जगह-जगह पर अनेक छोटी छोटी रियासतें थी। सभी राजे महाराजे अपनी राज्य सीमा के अंदर राज्य चलाना और कमजोर राज्यों पर आक्रमण करके उसे अपने राज्य में मिला लेना ही श्रेयस्कर कार्य मानते थे। राज्य का विस्तार करना, यही राजतंत्र की शासन प्रणाली थी, पूरा भारत इसी प्रणाली का अभ्यस्त था, प्रजातंत्र की जानकारी भारतीयों के पास नहीं थी। अत: प्रजातंत्र का विषय भारतीयों के लिए नया था। अंग्रेजों के शासन काल में ऐसा आभास दिया गया था कि भारत में प्रजातंत्र अंग्रेजों की देन है। अंग्रेज ठहरे कूटनीतिज्ञ और स्वार्थी वे भारत को स्वतंत्र करना चाहते ही नही थे। इसीलिये भारत की स्वतंत्रता प्राप्ति पर, ब्रिटिश, भारतीय सत्ताधारियो को प्रजातंत्र में कूटनीति से कैसे राज्य करना, लोभ, छलावा और स्वार्थ का पाठ पढ़ाकर, भारत का विभाजन कर, प्रजातंत्र की राजनीति सिखाकर ही भारत से गये थे। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात दुर्भाग्य से भारत का राजनैतिक नेतृत्व नेताजी जैसे राष्ट्रवादी ताकतों के स्थान पर ऐसे लोगों के हाथों में आया जिन्होंने अंग्रेजों द्वारा चलायी जा रही नीतियों का अनुसरण करना ही उचित समझा। भारतीय सनातन संस्कृति के अनुपालन को बढ़ावा ही नहीं दिया गया जबकि उस समय भी भारत में हिंदू बहुसंख्यक थे। प्रजातंत्र के नाम पर अल्पसंख्यकों के हितों को सुरक्षित रखने को सर्वोच्च प्राथमिकता दी गई।

अंडमान एक स्वतंत्र द्वीप समूह था इसका इतिहास भी बहुत लंबा है। अभी अभी मोदी सरकार ने अंडमान निकोबार द्वीप समूह का नाम बदलकर श्री विजय पुरम रख दिया है।

वैश्विक स्तर पर भारतीय रुपए के मान को गिरने से बचाने हेतु कम करना होगा आयात

एक अमेरिकी डॉलर की तुलना में भारतीय रुपया 86.62 रुपए तक के रिकार्ड निचले स्तर पर पहुंच गया है, बहुत सम्भव है कि आगे आने वाले समय में यह 87 रुपए अथवा 90 रुपए के स्तर को भी पार कर जाय। हालांकि अंतरराष्ट्रीय बाजार में रुपए की गिरावट के लिए वैश्विक स्तर पर कई कारक जिम्मेदार है परंतु मुख्य रूप से अमेरिकी अर्थव्यवस्था के लगातार मजबूत होने के संकेत मिल रहे हैं, जैसे, रोजगार हेतु नई नौकरियों की तो जैसे बहार ही आई हुई है। जनवरी 2025 माह में दिसम्बर 2024 माह के जारी किए के आंकड़ों के अनुसार अमेरिका में 256,000 से अधिक नई नौकरियां पैदा हुई हैं जबकि अनुमान लगभग 200,000 नौकरियों का ही था, नवम्बर 2024 माह में 212,000 नौकरियां पैदा हो सकी थीं। अमेरिकी अर्थव्यवस्था में मजबूती के चलते फेडरल रिजर्व, यूएस फेड रेट में कमी की घोषणा को रोक सकता है एवं अब अमेरिकी अर्थशास्त्रियों का मत है कि केलेंडर वर्ष 2025 में केवल एक अथवा दो बार ही फेड रेट में कमी की घोषणा हो, क्योंकि, रोजगार के क्षेत्र में मजबूती के चलते बहुत सम्भव है कि मुद्रा स्फीति में कमी लाने में अधिक समय लग सकता है। अमेरिका में बढ़ी हुई ब्याज दर के चलते अमेरिकी डॉलर इंडेक्स एवं अमेरिकी ट्रेजरी बिल पर यील्ड भी मजबूत बनी हुई है इससे अमेरिकी डॉलर लगातार और अधिक मजबूत हो रहा है एवं पूरे विश्व से डॉलर अमेरिका की ओर आकर्षित हो रहा है जबकि इसके विरुद्ध अन्य देशों की मुद्राओं पर स्पष्टत- दबाव दिखाई दे रहा है।

दिनांक 20 जनवरी 2025 को डोनाल्ड ट्रम्प के अमेरिका के राष्ट्रपति पद की शपथ लेने के बाद बहुत सम्भव है कि अमेरिका में आयात किए जाने वाले कई उत्पादों पर आयात कर की दर बढ़ा दी जाय क्योंकि अमेरिकी राष्ट्रपति पद के चुनाव प्रचार के दौरान बार बार इसका जिक्र किया गया है। यदि ऐसे निर्णय अमेरिका में लागू किए जाते हैं तो इससे अमेरिका में मुद्रा स्फीति फैलेगी और यदि ऐसा होता दिखाई देता है तो यू एस फेडरल रिजर्व ब्याज दरों में कमी के स्थान पर वृद्धि की घोषणा भी कर सकता है। इससे अमेरिकी डॉलर में और अधिक मजबूती आएगी और अन्य देशों की मुद्राओं का अंतरराष्ट्रीय स्तर पर और अधिक अवमूल्यन होने लगेगा।

दूसरे, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कच्चे तेल की कीमतें भी एक बार पुन: बढ़ती हुई दिखाई दे रही है जो 81 डॉलर प्रति बैरल के स्तर को पार कर गई हैं। इससे भी भारतीय रुपए पर दबाव बढ़ता हुआ दिखाई दे रहा है। भारत आज भी अपने कच्चे तेल की कुल खपत का 87 प्रतिशत से अधिक तेल का आयात करता है और इस आयातित कच्चे तेल का भुगतान अमेरिकी डॉलर में करना होता है, जिससे भारत के लिए अमेरिकी डॉलर की मांग भी लगातार बढ़ रही है। बल्कि इससे तो भारत में भी मुद्रा स्फीति के बढ़ने का खतरा उत्पन्न हो रहा है। पिछले वर्ष भारत ने कच्चे तेल के आयात पर 13,200 करोड़ अमेरिकी डॉलर की राशि खर्च की है।

तीसरे, विदेशी संस्थागत निवेशक भारतीय शेयर बाजार से अपना पैसा निकालने में लगे हुए हैं क्योंकि उन्हें अमेरिका में ब्याज दरों के अच्छे स्तर को देखते हुए अपने निवेश पर अधिक आय

की सम्भावना दिखाई दे रही है। विदेशी संस्थागत निवेशकों द्वारा 27 सितम्बर 2024 से भारतीय शेयर बाजार में लगातार बिकवाली की जा रही है और दिनांक 17 जनवरी 2025 तक 232,317 करोड़ रुपए की बिकवाली शेयर बाजार में उनके द्वारा की जा चुकी है।

अंतरराष्ट्रीय बाजार में एक देश की मुद्रा की तुलना में दूसरे देश की मुद्रा की कीमत यदि गिरने लगे तो इसके पीछे सामान्यत: दोनों देशों में मुद्रा स्फीति की दर को जिम्मेदार माना जाता है। जैसे यदि अमेरिका में मुद्रा स्फीति की दर 3 प्रतिशत प्रतिवर्ष है और भारत में मुद्रा स्फीति की दर 5.5 प्रतिशत प्रतिवर्ष है तो भारतीय रुपए की कीमत अंतरराष्ट्रीय बाजार में अमेरिकी डॉलर की तुलना में 2.5 प्रतिशत से गिरनी चाहिए। इस दृष्टि से अर्थशास्त्र में यह एक सैद्धांतिक कारण माना जाता है और इस सिद्धांत को अपनाकर विदेशी निवेशक उन्हीं देशों में अधिक निवेश करते हैं जहां मुद्रा स्फीति की दर नियंत्रण में रहती है।

पूरे विश्व का 88 प्रतिशत विदेशी व्यापार अमेरिकी डॉलर में होता है। जिससे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अमेरिकी डॉलर की मांग लगातार बढ़ती जा रही है। बाजार में जिस भी उत्पाद की मांग बढ़ेगी और यदि उस उत्पाद की आपूर्ति बाजार में नियंत्रित है तो उस उत्पाद की कीमत भी बाजार में बढ़ेगी। यही हाल अमेरिकी डॉलर का अंतरराष्ट्रीय बाजार में आज हो रहा है। अमेरिकी डॉलर की कीमत बढ़ रही है तो अन्य देशों की मुद्राओं की कीमत स्वाभाविक रूप से गिर रही है। साथ ही, 17 जनवरी 2025 को अमेरिकी डॉलर इंडेक्स 109.35 के स्तर पर पहुंच गया है। अमेरिकी डॉलर इंडेक्स का बढ़ना यानी दुनिया भर में डॉलर की मांग बढ़ रही है। अमेरिका में 10 वर्षीय बांड पर यील्ड भी 4.65 प्रतिशत प्रतिवर्ष से भी आगे निकल गई है। अन्य देशों की मुद्राओं की बाजार कीमत भारतीय रुपए की तुलना में अधिक तेजी से गिरी है। जनवरी 2024 से लेकर जनवरी 2025 के बीच अमेरिकी डॉलर अंतरराष्ट्रीय बाजार में लगभग 10 प्रतिशत मजबूत हुआ है। जबकि गिरने वाली मुद्राओं में भारतीय रुपया 3.5 प्रतिशत, ब्रिटिश पाउंड 3.8 प्रतिशत, यूरो 6.59 प्रतिशत, स्विस फ्रैंक 7.07 प्रतिशत, आस्ट्रेलियन डॉलर 8.09 प्रतिशत, स्वीडिश क्रान 9.5 प्रतिशत, न्यूजीलैंड डॉलर 12.5 प्रतिशत, टरकिश लीरा 18.5 प्रतिशत एवं ब्राजीलियन रीयल 24.74 प्रतिशत तक गिरा है।

पहले दिन किसी ने नहीं लिया मेयर का फॉर्म

निकाय चुनाव के लिए नामांकन शुरू, पार्षद के लिए 29 दावेदारों ने लिया पर्चा

मीडिया ऑडीटर, बिलासपुर (एजेंसी)। बिलासपुर में नामांकन के पहले दिन मेयर के लिए किसी भी प्रत्याशी ने फॉर्म नहीं लिया। पहले दिन एक भी नामांकन जमा नहीं हुआ। विभिन्न वार्डों के लिए पार्षद के लिए दावेदारी करने वाले 29 उम्मीदवारों ने फॉर्म खरीदा है। नामांकन फॉर्म लेने और जमा करने की अंतिम तिथि 28 जनवरी तक है। वही नाम वापसी का समय 31 जनवरी निर्धारित किया गया है।

चुनाव की अधिसूचना जारी होने के साथ नगरी निकायों में नाम निर्देशन पत्र लेने का काम बुधवार से शुरू हो गया है। इसके साथ ही चुनाव को लेकर माहौल बनने लगा है। बुधवार को नामांकन फॉर्म लेने और जमा करने का पहला दिन रहा।

निकाय चुनाव के अंतर्गत 70 वार्डों में बीजेपी-कांग्रेस प्रत्याशियों के बीच में टकराव भी शुरू हो गया है। वहीं हर वार्ड में इन दोनों प्रमुख पार्टी के कई पार्षद उम्मीदवार सामने आ चुके हैं, जो दावेदारी कर रहे हैं।

29 में कांग्रेस के 14 और भाजपा के 8 उम्मीदवार: बुधवार को पहले दिन पार्षद के 29 दावेदारों ने फॉर्म खरीदा है। इसमें विभिन्न वार्ड पार्षद के लिए कांग्रेस के 14 दावेदार, बीजेपी के आठ उम्मीदवारों के साथ ही आम आदमी पार्टी के एक और 8 निर्दलीय उम्मीदवारों ने नामांकन फॉर्म खरीदा है। बता दें कि फॉर्म खरीदने और जमा करने के लिए कुछ ही दिन का समय दिया गया है। ऐसे में गुरुवार को फॉर्म लेने के लिए भीड़ उमड़ेगी। वहीं फॉर्म जमा करने की प्रक्रिया भी शुरू हो जाएगी।

कलेक्टर ने लिया नामांकन की तैयारी का जायजा: कलेक्टर व जिला निर्वाचन अधिकारी अवनीश शरण ने बुधवार को नामांकन की तैयारी का जायज़ा लिया। जिला कार्यालय की विभिन्न कक्षों में पहुंचकर रिटर्निंग अफसरों की तैयारियों को परखने का काम किया। उप जिला निर्वाचन अधिकारी व अपर कलेक्टर शिव कुमार बनर्जी भी उनके साथ रहे।

महापौर सहित पार्षदों के लिए 8 कमरों में नामांकन लिए जा रहे हैं। कलेक्टर ने सभी रिटर्निंग अफसरों को आरओ हैंडबुक को अच्छी तरह पढ़ने के निर्देश दिए। साथ ही जानकारी देने के लिए एक बैनर भी आरओ कक्ष में लगाने कहा है।

सुविधा के लिए प्रत्येक 10 वार्डों के लिए एक रिटर्निंग आफिसर नियुक्त किए गए हैं। उन्होंने कहा कि नामांकन जमा करने वाले उम्मीदवारों को किसी प्रकार की असुविधा नहीं होनी चाहिए। उनके बैठने और पेयजल की व्यवस्था की जाए। उन्हें समुचित मार्गदर्शन दिया जाए।

ध्वनि विस्तारक यंत्रों को लेकर गाइडलाइन जारी: नगरीय निकाय और त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव की घोषणा के साथ ही जिले में आदर्श आचरण संहिता प्रभावशील हो चुकी है। ऐसे में कलेक्टर अवनीश शरण ने राजनैतिक दलों और अभ्यर्थियों द्वारा प्रचार-प्रसार करने एवं शांति व्यवस्था बनाए रखने संबंधी नियमों का पालन करने निर्देशित किया है।

निर्वाचन के दौरान राजनैतिक दलों, उनके कार्यकर्ताओं, निर्वाचन लड़ने वाले अभ्यर्थियों और उनके सहयोगी व्यक्तियों द्वारा एक स्थान पर या वाहनों में लाउडस्पीकर का उपयोग कर प्रचार-प्रसार किया जाता है। लाउडस्पीकर की ऊंची आवाज से विद्यार्थियों, वृद्धजनों और दुर्बल व्यक्तियों को काफी परेशानी होती है।

कलेक्टर ने कोलाहल नियंत्रण अधिनियम 1985 की धारा 04 के अंतर्गत प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए जिले के सीमा के अंतर्गत आने वाले नगरीय और ग्रामीण क्षेत्रों में रात 10 बजे से सुबह 6 बजे तक ध्वनि विस्तारक यंत्रों के प्रयोग करने और कराए जाने पर प्रतिबंध लगा दिया है।

चुनावी सभाओं और चुनाव प्रचार करने के लिए वाहनों में ध्वनि विस्तारक यंत्र लगाने जिला मुख्यालय के लिए अनुविभागीय दण्डाधिकारी, अनुविभागीय मुख्यालयों पर संबंधित अनुविभागीय दण्डाधिकारी, तहसील मुख्यालय में तहसीलदार एवं कार्यपालक दण्डाधिकारी तथा उप तहसील स्तर पर अतिरिक्त तहसीलदार, नायब तहसीलदार और कार्यपालिक दण्डाधिकारी से लिखित में अनुमति लेना अनिवार्य होगा।

ट्रक की टक्कर से कैफे संचालक की मौत

बिलासपुर-रायपुर नेशनल हाईवे पर हादसा, आरोपी ड्राइवर की तलाश कर रही पुलिस

मीडिया ऑडीटर, बिलासपुर (एजेंसी)। बिलासपुर-रायपुर नेशनल हाईवे में बुधवार की देर शाम अज्ञात ट्रक ने बाइक को टक्कर मार दी, जिससे बाइक सवार कैफे संचालक की मौत हो गई। हादसा नेशनल हाईवे में सरगांव के पास रेस्ट इन सर्विस में हुआ। घटना के बाद आरोपी चालक ट्रक लेकर फरार हो गया। पुलिस उसकी तलाश कर रही है। घटना सरगांव थाना क्षेत्र की है।

बिलासपुर के तिफरा के यदुनंदननगर निवासी तरुण कुमार प्रजापति (29) कोनी में टिक-टॉक कैफे का संचालक था। बुधवार को वह किसी काम से सरगांव गया था। देर शाम वो बाइक में सवार होकर वापस अपने घर लौट रहा था।

तेज रफ्तार ट्रक ने मारी टक्कर, मौत: अभी बाइक सवार तरूण प्रजापति बिलासपुर नेशनल हाईवे में सरगांव स्थित रेस्ट इन सर्विस एरिया के पास पहुंचा था। उसी समय रायपुर से बिलासपुर की ओर आ रही ट्रक के चालक ने उसकी बाइक को पीछे से टक्कर मार दी, जिससे वह बाइक समेत गिर गया।

इस हादसे में उसके सिर में गंभीर चोंटे आई। वो खून से लथपथ पड़ा था। घटना की जानकारी मिलने के बाद मौके पर पहुंची पुलिस ने उसे अस्पताल पहुंचाया, जहां डॉक्टर ने उसे मृत घोषित कर दिया। पुलिस इस मामले की जांच कर रही है।

आरोपी चालक की तलाश में जुटी पुलिस: बताया जा रहा है कि इस घटना के बाद आरोपी चालक ट्रक लेकर फरार हो गया। प्रत्यक्षदर्शी ट्रक का नंबर नहीं देख पाए। जिस पर उन्होंने घटना की जानकारी पुलिस को दी। अब पुलिस सीसीटीवी और टोल प्लाजा में एंट्री के आधार पर ट्रक की पहचान कर आरोपी चालक की तलाश कर रही है।

भूमि अधिग्रहण एवं रकबा सुधार हेतु दावा आपत्ति की अंतिम तिथि 6 तक

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी (निप्र)। न्यायालय अतिरिक्त तहसीलदार उप तहसील नागपुर 03 जनवरी 2025 अनावेदक गोकुल पिता जवनाथ, निवासी ग्राम सरोला जिला एमसीबी द्वारा जारी पत्र क्र./फ/अति.तह./वाचक/2025 में बताया गया है कि ग्राम सरोला, उप तहसील नागपुर, जिला एमसीबी स्थित भूमि खसरा नंबर 54, 61/20, 108/3, 108/4, रकबा क्र0 1.4610, 0.1290, 0.5470, 1.5380 हेक्टर, नागपुर चिरमिरी रोड हाल्ट 17 कि.मी. रेल परियोजना के विस्तार हेतु भूमि अधिग्रहण किया जा रहा है। इस भूमि के अधिग्रहण के संदर्भ में हल्का पटवारी नं.-06 द्वारा प्रस्तुत किए गए प्रतिवेदन में उल्लेख किया गया है कि ग्राम सरोला के 4 खसरों में जिनके वर्तमान और मिसल वर्ष 1944-45 के रकबे में भिन्नता पाई गई है। इसके आधार पर रकबे में सुधार किया जाना है। इस संदर्भ में, यदि कोई व्यक्ति उपरोक्त भूमि के संबंध में दावा या आपत्ति प्रस्तुत करना चाहता है, तो उसे 06 फरवरी 2025 तक प्रस्तुत करना होगा। निर्धारित तिथि के पश्चात् प्राप्त किसी भी प्रकार की आपत्ति या दावा स्वीकार नहीं किया जाएगा।

बच्चों का धान बेचकर शराब पी गया शिक्षक

नशे में स्कूल कैंपस में सोता रहा; कांकेर में स्टूडेंट्स को छेरछेरा में मिला था दान

मीडिया ऑडीटर, कांकेर (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ के कांकेर में नशे में धुत होकर शिक्षक स्कूल में सोता रहा। जानकारी के मुताबिक छेरछेरा में स्टूडेंट्स ने घर-घर जाकर दान मांगा था, शिक्षक ने दान में मिले धान को बेचकर शराब पी ली।

मामला दुर्गूकोंदल थाना क्षेत्र के ग्राम पलाचूर प्राथमिक शाला का है। जहां बुधवार को सहायक शिक्षक राम कुमार कोमरा नशे में धुत होकर सोता नजर आया। घटना का वीडियो भी वायरल हो रहा है।

ग्रामीणों के अनुसार स्कूली बच्चे छेरछेरा पूर्णिमा में घर-घर जाकर दान मांगकर धान और अन्य सामग्री एकत्रित किए थे। शिक्षक को इसकी जानकारी मिलते ही वो धान को ले जाकर दुकान में बेच दिया।

उस पैसे का शराब पी लिया। ग्रामीणों का यह भी कहना है कि शिक्षक रोजाना इसी हालत में स्कूल पहुंचता है और अब तक उच्च अधिकारियों द्वारा इस ओर कोई ध्यान नहीं दिया जा रहा है, जिससे समस्याएं बनी हुई है।

वायरल वीडियो के आधार पर होगी कार्रवाई: जिला शिक्षा अधिकारी अशोक पटेल ने बताया कि उन्होंने भी वीडियो देखा है। ब्लॉक शिक्षा अधिकारी को मामले की जांच के लिए निर्देशित किया गया है। रिपोर्ट आने पर एक्शन लिया जाएगा। उन्होंने आगे कहा कि वीडियो में जो घटना देखने को मिल रही है, वह बहुत निंदनीय है एक शिक्षक के कारण हमारा पूरा शिक्षक समुदाय बदनाम हो रहा है।

लगातार आ रही शिकायतें: शराब के नशे में स्कूल पहुंचने की यह कोई पहली घटना नही है, इसके पहले भी कई वीडियो आ चुके हैं और लगातार विभाग के अधिकारियों की ओर से कार्रवाई की जा रही है। बावजूद इसके लगातार जिले से वीडियो सामने आ रहे हैं। शिक्षकों का नशे में स्कूल पहुंचना, शिक्षा व्यवस्था पर सवाल खड़ा कर रहा है।

बलरामपुर में भी शराबी शिक्षक का वीडियो वायरल: बलरामपुर जिले में भी नशे में धुत एक टीचर का वीडियो वायरल हो रहा है। शिक्षक नशे में लड़खड़ाते हुए नजर आए। इतना ही नहीं शराबी टीचर बच्चों को बिना पढ़ाए ही निकल भी गए।

मामला कुसमी विकासखंड के सोनपुर गांव स्थित प्राथमिक शाला बैगापारा का है। सहायक शिक्षक का नाम गणेश राम बताया जा रहा है। वीडियो में बच्चे यह भी कह रहे हैं कि, गुरुजी रोज ही ऐसे आते हैं।

मामले का वीडियो वायरल हुआ तो डीईओ देवेंद्र नाथ मिश्रा ने कहा कि, एक शिक्षक का वीडियो वायरल हो रहा है, जो नशे में पाया गया है। विकास खंड शिक्षा अधिकारी को इस मामले की जांच के लिए कहा गया है। रिपोर्ट मिलते ही कार्रवाई की जाएगी।

पत्थर से सिर कुचलकर हत्या, लहूलुहान मिली शख्स की लाश, डॉग-स्क्वायड, फोरेंसिक की टीम कर रही जांच

मीडिया ऑडीटर, कोरबा (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ के कोरबा में पत्थर से कुचलकर एक शख्स की हत्या कर दी गई है। उरगा थाना क्षेत्र के ग्राम भैसमा के साप्ताहिक बाजार के पास आज (गुरुवार) सुबह सागौन बाड़ी में राहगीरों ने एक लाश पड़ी देखी। हत्या की जानकारी मिलते ही घटनास्थल पर भीड़ जमा हो गई।

सूचना मिलने पर पहुंची पुलिस ने इलाके को सील कर दिया है। मौके पर डॉग स्क्वॉयड और फोरेंसिंक की टीम जांच कर रही है।

शव की नहीं हो पाई पहचान: कोरबा सीएसपी भूषण एक्का ने बताया कि किसी शव की पहचान नहीं हो पाई है। आसपास के लोगों से हुलिए के आधार पर जानकारी जुटाई जा रही है। लाश को देखकर लगभग उसकी उम्र 50 से 55 तक आंकी जा रही है। उसके सिर के बाल पके हुए हैं। वह फुल पैंट और चप्पल पहना हुआ है।

गांव में कराई जा रही मुनाई: इसके अलावा शर्ट के ऊपर एक जैकेट भी पहना हुआ मिला है। वॉट्सऐप के जरिए और आसपास गांव में कोटवार के माध्यम से शव की पहचान के लिए मुनादी कराई जा रही है। परिजनों के मिलने के बाद ही पता चल सकेगा की कौन है, कहां का रहने वाला है, कब और कैसे घर से निकला था।

लिव-इन-रिलेशन में रह रही युवती का लटकता मिला शव

तीन बच्चों के पिता से था प्रेम संबंध, विवाद के कारण सुसाइड करने की आशंका

मीडिया ऑडीटर, सरगुजा (एजेंसी)। सरगुजा जिले के ग्राम सानीबर्रा में लिव-इन-रिलेशन में रह रही युवती का शव फांसी के फंदे में झूलता मिला। युवती पहले से शादीशुदा व तीन बच्चों के पिता के साथ लिव-इन-रिलेशन में रह रही थी। युवक की पत्नी अपने पति एवं युवती से लगातार विवाद कर रही थी। प्रथम दृष्टया मामला आत्महत्या का बताया गया है। घटना उदयपुर थाना क्षेत्र का है।

जानकारी के मुताबिक, ग्राम पंचायत सानीबर्रा के सुखरी भंडार में सुमार साय गोंड के साथ लिव-इन-रिलेशन में रह रही युवती जानकी टेकाम (23) का शव बुधवार की रात करीब 10 बजे घर में फांसी में झूलता मिला। घटना की सूचना पर उदयपुर पुलिस मौके पर पहुंची। शव का सुबह पंचनामा कराया गया और इसके बाद पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया।

तीन माह से थे लिव-इन-रिलेशन में: सुमार साय गोंड पहले से शादीशुदा है और उसके तीन बच्चे भी हैं। सुमार साय का ग्राम लक्ष्मीपुर (कठमुडा) की रहने वाली जानकी टेकाम से प्रेम संबंध बन गया। नवंबर 2024 में जानकी टेकाम को सुमार साय अपने साथ घर सुखरी भंडार ले आया और वहां अपनी पत्नी परमेश्वरी गोंड व तीन बच्चों के साथ रखा था। जानकी को भगाकर लाने और लिव-इन-रिलेशन में रखने को लेकर सुमार साय की पत्नी दोनों से विवाद करती थी।

रात में कमरे में झूलता मिला शव: बुधवार को ग्राम सुखरी भंडार में ग्रामीण छेरता का त्यौहार मना रहे थे। सुमार साय की पत्नी परमेश्वरी गोंड शाम सात बजे बच्चों को घर में सुलाकर गांव में लोहड़ी कार्यक्रम देखने गई हुई थी। सुमार साय गोंड और जानकी टेकाम घर में ही थे।

रात 9.30 बजे जानकी का शव घर में फांसी में झूलता देख इसकी सूचना उदयपुर पुलिस को दी गई। सूचना पर उदयपुर थाना प्रभारी कुमारी चंद्राकर पुलिस बल के साथ मौके पर पहुंची। गुरुवार सुबह शव को पंचनामा के बाद पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया। उसके नाक से खून निकला हुआ था। उसका आधा पैर चारपाई से टिका था।

प्रथम दृष्टया आत्महत्या, पीएम रिपोर्ट का इंतजार: उदयपुर थाना प्रभारी कुमारी चंद्राकर ने कहा कि प्रथम दृष्टया मामला आत्महत्या का है। पोस्टमार्टम रिपोर्ट से मौत के कारणों का खुलासा हो सकेगा। पुलिस मामले में युवती के परिजनों एवं सुमार साय के परिजनों से भी पूछताछ कर रही है।

समस्त कार्यालयों में मनाया जाएगा राष्ट्रीय मतदाता दिवस

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी (निप्र)। प्रत्येक वर्ष 25 जनवरी को राष्ट्रीय मतदाता दिवस का आयोजन किया जाता है। निर्वाचन आयोग के द्वारा इस वर्ष 15 वें राष्ट्रीय मतदाता दिवस 25 जनवरी को प्रातः 11:00 बजे प्रत्येक कार्यालय शपथ ग्रहण किये जाने हेतु निर्देशित किया गया है। आयोग द्वारा दिये गये निर्देशानुसार राष्ट्रीय मतदाता दिवस के अवसर पर शपथ ग्रहण कार्यक्रम 24 जनवरी 2025 एवं जिन कार्यालय में शनिवार को अवकाश नहीं है उन कार्यालयों में 25 जनवरी 2025 को कार्यरत समस्त अधिकारी एवं कर्मचारी द्वारा पूर्वाह्न 11:00 बजे शपथ लेने की कार्यवाही कर फोटोग्राफ्स जिला कार्यालय में उपलब्ध कराना सुनिश्चित करने के निर्देश दिये गये हैं। जिला निर्वाचन अधिकारी ने सभी संबंधित अधिकारियों, कर्मचारियों से कार्यक्रम में समय पर उपस्थित होने की अपील की है। राष्ट्रीय मतदाता दिवस लोकतांत्रिक प्रक्रिया को मजबूत करने और नागरिकों को अपने मताधिकार के उपयोग के प्रति प्रोत्साहित करने का एक महत्वपूर्ण अवसर है।

भूमि अधिग्रहण, भूमि विक्रय एवं रकबा सुधार हेतु दावा आपत्ति की अंतिम तिथि 6 तक

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी (निप्र)। न्यायालय अतिरिक्त तहसीलदार उप तहसील नागपुर जिला एमसीबी के पत्र क्र./फ/अति.तह./वाचक/2025 नागपुर 03 जनवरी 2025, अनावेदक श्री सुभाषचंद पिता श्री गोकुल निवासी ग्राम-सरोला, उप. तहसील नागपुर जिला एमसीबी के द्वारा ग्राम सरोला प.ह.नं. 06 में स्थित भूमि खसरा नंबर 108/1, रकबा 0.5260 है। उप तहसील नागपुर द्वारा प्राप्त पत्र में उल्लेखित नागपुर चिरमिरी रोड हाल्ट 17 कि.मी. रेल परियोजना के विस्तार हेतु भूमि अधिग्रहण कर कार्यवाही जारी है, जिसमें हल्का पटवारी नं.-06 के द्वारा प्रतिवेदन प्रस्तुत किया गया है कि अधिग्रहित भूमि ग्राम सरोला के 4 खसरों में जिनके वर्तमान एवं मिसल वर्ष 1944-45 के रकबे में भिन्नता पाई गई है तथा उक्त प्रतिवेदन के आधार पर रकबा में सुधार किया जाना है। अतः उपरोक्त वर्णित भूमि के संबंध में जिस किसी भी व्यक्ति को कोई दावा आपत्ति पेश करना है, तो दिनांक 06 फरवरी 2025 तक पेश कर सकता है। निर्धारित तिथि के पश्चात् प्राप्त किसी भी प्रकार की आपत्ति अथवा दावा स्वीकार नहीं किया जावेगा। इसी तरह एक और न्यायालय कलेक्टर एवं दण्डाधिकारी जिला एमसीबी छत्तीसगढ़ के पत्र क्रमांक 240/वाचक/कले./2025, दिनांक 10 जनवरी 2025, मनेन्द्रगढ़ के अनुसार, अनावेदिका श्रीमती सुनीता बुनकर पिता श्री रामवृक्ष राम, निवासी ग्राम मनेन्द्रगढ़, तहसील मनेन्द्रगढ़, जिला एमसीबी द्वारा ग्राम मनेन्द्रगढ़ के पटवारी हल्का नंबर 14 में स्थित भूमि खसरा नंबर 312/58, रकबा 0.0170 हेक्टेयर के विक्रय की अनुमति हेतु आवेदन प्रस्तुत किया गया है। न्यायालय में प्रस्तुत जांच प्रतिवेदन के अनुसार, उक्त भूमि के खसरा नंबर 312/58 के रकबे में वृद्धि पाई गई है। मूल खसरा नंबर 312/58 के राजस्व निरीक्षक के जांच प्रतिवेदन के आधार पर उक्त भूमि के रकबे में सुधार किया जाना है। इस संबंध में, जिस किसी भी व्यक्ति को कोई दावा या आपत्ति प्रस्तुत करनी हो, वह 6 फरवरी 2025 तक प्रस्तुत कर सकता है। निर्धारित तिथि के पश्चात प्राप्त किसी भी प्रकार की आपत्ति या दावा स्वीकार नहीं किया जाएगा।

नान के विशेष सचिव को नहीं मिली बेल, मनी लॉन्ड्रिंग और लेवी वसूली मामले में जेल में बंद है आरोपी, हाईकोर्ट से जमानत याचिका खारिज

मीडिया ऑडीटर, बिलासपुर (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ हाईकोर्ट ने नागरिक आपूर्ति निगम के विशेष सचिव और मार्कफेड के एमडी मनोज कुमार सोनी की जमानत याचिका को खारिज कर दिया है। राइस मिलर्स से लेवी वसूली और मनी लॉन्ड्रिंग केस में उसके खिलाफ साक्ष्य मिलने के बाद उसकी गिरफ्तारी की गई थी। कोर्ट ने सबूतों के आधार पर उसे जमानत देने से इनकार किया।

मनोज कुमार सोनी 1995 बैच के आईटीएस अधिकारी हैं। 26 जून 2014 से छत्तीसगढ़ सचिवालय में विशेष सचिव के पद पर पदस्थ थे। उन्होंने नागरिक आपूर्ति निगम और मार्कफेड के एमडी के रूप में भी अतिरिक्त प्रभार संभाला था।

जुलाई 2023 में आईटी विभाग ने उनके निवास पर छापेमारी की थी, जिसमें 1 लाख 5 हजार रुपये नगद, तीन सोने के सिक्के और 1 लाख 21 हजार रुपये से अधिक के सोने के आभूषण जब्त किए गए थे। जांच के बाद ईओडब्ल्यू और ईडी ने एफआईआर दर्ज कर उन्हें 30 अप्रैल 2024 को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया।

मेडिकली अनफिट बताकर मांगी जमानत: मनोज कुमार सोनी ने अपनी खराब तबीयत का हवाला देते हुए हाईकोर्ट में जमानत के लिए आवेदन किया था। सुनवाई के दौरान शासन ने उनकी किसी तरह की बीमारी की जानकारी नहीं दी और जमानत का विरोध किया। सभी पक्षों की दलीलें सुनने के बाद कोर्ट ने कहा कि दस्तावेजों और सबूतों से यह स्पष्ट होता है कि आरोपी इस घोटाले का मुख्य साजिशकर्ता है।

जांच में राइस मिलर्स से अवैध वसूली और अपराध की आय को मनी लॉन्ड्रिंग में इस्तेमाल करने के सबूत मिले हैं। कोर्ट ने कहा कि आरोपित की संलिप्तता के पर्याप्त प्रमाण हैं, जो उसके अन्य आरोपियों के साथ सांठगांठ को दर्शाते हैं।

धारा 45(1) के तहत जमानत से इंकार: कोर्ट ने अपने आदेश में कहा कि मनी लॉन्ड्रिंग की प्रकृति और गंभीरता को देखते हुए और धारा 45(1) के विशेष प्रावधानों के आधार पर आरोपित को जमानत देना उचित नहीं है। इस प्रकार, जमानत याचिका खारिज कर दी गई।

नगरीय निकाय एवं त्रिस्तरीय पंचायत निर्वाचन 2025 हेतु मास्टर ट्रेनरों का प्रशिक्षण सम्पन्न

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी (निप्र)। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी डी. राहुल वेंकट के निर्देशन में आगामी नगरीय निकाय एवं त्रिस्तरीय पंचायत निर्वाचन 2025 की खड़गवां, मनेंद्रगढ़ और भरतपुर की मतदान दलों के प्रशिक्षण के लिए 78 मास्टर ट्रेनरों का प्रशिक्षण स्वामी आत्मानंद स्कूल मनेन्द्रगढ़ में सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। मास्टर ट्रेनर टी. विजय गोपाल राव एवं वेद प्रकाश मिश्रा ने प्रशिक्षण के दौरान ईवीएम सेट के माध्यम से दो पदों पर मतदान प्रक्रिया को विस्तार से समझाया। उन्होंने बताया कि एक मतदान यूनिट में 16 पैनल का होता है। पहले पैनल में महापौर/अध्यक्ष पद के नाम का उल्लेख किया जाएगा, इसके बाद के पैनलों में अभ्यर्थियों के नाम, फोटो और निर्वाचन प्रतीक होंगे।

पत्नी की बॉडी के टुकड़े किए, प्रेशर कुकर में उबाला

हैदराबाद (एजेंसी)। तेलंगाना में सेना से रिटायर्ड एक शख्स ने अपनी पत्नी की हत्या कर दी। हत्या के बाद सबूत मिटाने लाश के छोटे-छोटे टुकड़े किए और प्रेशर कुकर में उबालकर झील में फेंक दिया। कुछ रिपोर्ट्स में यह दावा किया जा रहा है कि हड्डियों से मांस अलग करने के लिए आरोपी ने उन्हें मूसल से कुचला था। पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। रंगारेड्डी जिले के मीरपेट के डीएसपी नागराजू ने बताया कि 18 जनवरी को सुबम्मा नामक एक महिला ने गुमशुदगी की शिकायत दर्ज कराई थी। उसने बताया था कि उसकी बेटी माधवी (35) की 13 साल पहले गुरुमूर्ति के साथ शादी हुई थी। गुरुमूर्ति सेना का रिटायर्ड कर्मचारी है। फिलहाल वह कंचनबाग में सुरक्षा गार्ड का काम करता है। रंगारेड्डी जिले के डीएसपी एलबी नागर ने बताया कि जिल्लेलगुडा में एक 35 साल की महिला के लापता होने का मामला उसकी मां ने दर्ज कराया था। मामले में पति खुद दावा कर रहा है कि उसने अपनी पत्नी की हत्या की है। आरोपी के खिलाफ ख्ख्कदर्ज कर जांच की जा रही है। हालांकि अभी तक पुलिस को शव के टुकड़े नहीं मिले हैं।

यूपी-राजस्थान समेत 5 राज्यों में बारिश की संभावना

जम्मू/नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली एनसीआर में बुधवार देर रात हल्की बारिश हुई। इससे गुरुवार सुबह घना कोहरा छाया रहा। कोहरे के कारण इंदिरा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर कई उड़ानें देरी से पहुंचीं। मौसम विभाग ने कहा कि आने वाले दिनों में दिल्ली में ठंड बढ़ सकती है। उत्तर प्रदेश के प्रयागराज, वाराणसी, अयोध्या के साथ-साथ पश्चिम बंगाल और ओडिशा में भी घना कोहरा छाया रहा। पंजाब, हरियाणा, पश्चिमी उत्तर प्रदेश, दिल्ली एनसीआर और उत्तरी राजस्थान में बारिश की संभावना है। पहाड़ी राज्यों जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश में लगातार चौथे दिन भी बर्फबारी हुई। हिमाचल प्रदेश के कई जिलों में बारिश भी हो रही है। कुछ जिलों में तापमान में बढ़ोतरी भी हुई। बुधवार को ऊना का टेम्परेचर 25.6ए डिग्री रहा। गुरुवार को हिमाचल के 5 जिलों में कोहरे और कोल्ड वेव का यलो अलर्ट जारी किया गया है। 28 तक राज्य में ऐसा मौसम बना रहेगा। जम्मू-कश्मीर के गुलमर्ग, सोनमर्ग, जोजिला पास जैसे ऊंचे इलाकों में मंगलवार को हुई बर्फबारी के कारण गुरेज-बांदीपुरा रोड, सेमथान-किश्तवाड़, मुगल रोड बंद हो गए। यहां बर्फ हटाने का काम जारी है। यूपी के 40 जिलों में घना कोहरा छाने की संभावना है। साथ ही बारिश भी हो सकती है।

महाकुंभ में 250 अवैध सिलेंडर जब्त

प्रयागराज (एजेंसी)। महाकुंभ का गुरुवार को 11वां दिन है। शाम को अग्निशमन विभाग ने महाकुंभ मेले से 200-250 अवैध सिलेंडर जब्त किए हैं। 19 जनवरी को महाकुंभ में लगी आग के बाद विभाग ने तलाशी अभियान चलाया। वहीं, अयोध्या में अपर्णा यादव ने कहा- ऐसा कुंभ पहले कभी नहीं हुआ। यह हमारे लिए सौभाग्य की बात है। मैं 25 जनवरी को उत्तर प्रदेश राज्य महिला आयोग के सदस्यों को भी वहां ले जा रही हूं। काशी विद्वत परिषद ने हिंदुओं के लिए नई आचार संहिता तैयार की है। सनातन धर्म के लोग क्या करें और क्या न करें, इसकी नियमावली है। इसे महाकुंभ में जारी किया जाएगा।

प्रधानमंत्री ने बच्चों से पूछा- टिफिन लाए हो

नई दिल्ली (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गुरुवार को नेताजी सुभाष चंद्र बोस की 128वीं जयंती पर उन्हें श्रद्धांजलि दी। वे संसद के सेंट्रल हॉल में स्कूल स्टूडेंट्स से मिले और उनसे बातचीत की। मोदी ने बच्चों से पूछा कि खाने का डिब्बा लेकर आए हो या नहीं। बच्चों के मना करने पर पीएम हंसकर बोले- बताओ तो मैं खाऊंगा नहीं।

इसके अलावा पीएम ने बच्चों को सूर्योदय योजना के बारे में समझाया और बताया कि ये कैसे क्लाइमेट चेंज के खिलाफ अच्छी पहल है। उन्होंने बच्चों से 2047 तक का लक्ष्य पूछा। बच्चों ने बताया कि 2047 तक देश को विकसित बनाना है। पीएम ने बच्चों के साथ जय हिंद के नारे भी लगाए। पीएम मोदी ने बच्चों से 3ः27 मिनट की बातचीत का वीडियो ङ्क पर शेयर किया। पीएम ने बच्चों से नेताजी सुभाष चंद्र बोस और देश के विजन को लेकर सवाल किए।

यूपी-राजस्थान समेत 12 राज्यों के 200 टोल पर घोटाला

आजमगढ़ (एजेंसी)। यूपी एसटीएफ ने एनएचएआई के टोल प्लाजा पर टैक्स वसूली में हो रहा घोटाला उजागर किया है। एसटीएफ की टीम ने बुधवार सुबह 3.50 बजे मिर्जापुर के अतरैला टोल प्लाजा पर छापेमारी कर 3 लोगों को पकड़ा। आरोपियों ने टोल प्लाजा पर लगे कंप्यूटर में अपना सॉफ्टवेयर इंस्टॉल कर रखा था। इसके जरिए टोल प्लाजा से बिना फास्टैग के गुजरने वाले वाहनों को फ्री दिखाकर उनसे वसूला गया पैसा पर्सनल अकाउंट में ले रहे थे। यह घोटाला यूपी-राजस्थान समेत 12 राज्यों के 200 टोल पर चल रहा था। अकेले अतरैला टोल प्लाजा पर 2 साल से हर दिन करीब 45 हजार रुपए की धांधली की जा रही थी। दो साल में 3 करोड़ 28 लाख रुपए की धांधली हो चुकी है। आरोपियों से 2 लैपटॉप, 1 प्रिंटर, 5 मोबाइल, 1 कार और 19000 रुपए बरामद किए हैं। जौनपुर के आलोक कुमार सिंह, प्रयागराज के राजीव कुमार मिश्र और मध्यप्रदेश के मझौली के रहने वाले मनीष मिश्रा को गिरफ्तार किया है।

योगी आदित्यनाथ बोले- आप झूठ बोलने की एटीएम, दिल्ली में रोहिंग्या-बांग्लादेशियों को बसाया

नई दिल्ली (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा- आप झूठ बोलने की एटीएम है, इन्होंने जनता से झूठे वादे किए। दिल्ली में रोहिंग्या और बांग्लादेशियों को बसाया। केजरीवाल दिल्ली में विकास नहीं चाहते। दिल्ली में बिजली यूपी से 3 गुना महंगी है। उन्होंने कहा- यहां सड़कों की हालत बहुत खराब है। केजरीवाल की राजनीति बांटो और राज करो की है। योगी दिल्ली की किराड़ी विधानसभा

में रैली कर रहे थे। आप ने पंजाब में महिला सम्मान निधि का वादा किया, लेकिन नहीं दी। दिल्ली के दंगों में आप के विधायक शामिल थे। केजरीवाल को चुनाव के समय पुजारियों की याद आई। 11 सालों में दिल्ली में कोई मंदिर नहीं बनवाया।

कल आपने देखा कि मेरे साथ संगम में 54 मंत्रियों ने डुबकी लगाई। मैं पूछना चाहता हूं क्या अरविंद केजरीवाल यमुना जी में जाकर अपने मंत्रियों के साथ डुबकी लगा सकते हैं? दिल्ली में चुनाव की तारीखों का ऐलान हो चुका है। 5 फरवरी को सभी 70 सीटों पर वोटिंग होगी।

सैफ हमला केस-महाराष्ट्र के मंत्री ने एक्टर को कचरा बताया

मुंबई (एजेंसी)। ऑटो ड्राइवर भजन से अपने घर पर मुलाकात करते सैफ अली खान। दूसरी तस्वीर में नितेश राणे हैं, जिन्होंने सैफ पर विवादित बयान दिया। एक्टर सैफ अली खान हमला मामले में अब राजनीति भी शुरू हो गई है। महाराष्ट्र के मंत्री और भाजपा नेता नितेश राणे ने बुधवार (22 जनवरी) को पुणे की एक सभा में कहा

कि आप मुंबई में बांग्लादेशियों को देखिए। वे सैफ के घर में घुस रहे हैं। पहले वे सड़क के किनारे खड़े रहते थे, अब उन्होंने घर में घुसना शुरू कर दिया है। हो सकता है कि वह उन्हें (सैफ अली खान) ले जाने आया हो। अच्छा है, कचरे को कहीं और ले जाना चाहिए। एनसीपी (शरद पवार) की नेता सुप्रिया सुले और जीतेंद्र आव्हाड़ सैफ अली खान, शाहरुख खान के बेटे और नवाब मलिक को लेकर ही चिंता जताते हैं। जब किसी हिंदू एक्टर पर हमला होता है तो ये लोग कभी आगे नहीं आते।

शहीद इंस्पेक्टर का बेटा बोला- पापा आज तो बोल दो

मेरठ (एजेंसी)। इंस्पेक्टर सुनील कुमार का बेटा मंजीत फफक कर रो पड़ा। दूसरी फोटो में अफसर शहीद के शव को कंधा देते दिख रहे हैं। पापा आज तो बोल दो। प्लीज एक बार कुछ तो बोल दो...ये कहते हुए बेटा मंजीत मेरठ पुलिस लाइन में शहीद इंस्पेक्टर के शव से लिपट गया। फूट-फूटकर रोने लगा। यह देखकर वहां मौजूद हर शख्स रो पड़ा। शामली एनकाउंटर में शहीद एसटीएफ इंस्पेक्टर सुनील कुमार का अंतिम संस्कार मेरठ के इंचौली स्थित उनके गांव मसूरी में किया गया। बेटे मंजीत ने शहीद पिता को

मुखाग्नि दी। शहीद सुनील कुमार का पार्थिव शरीर सुबह 9 बजे गुरुग्राम से मेरठ पुलिस लाइन लाया गया। परिजन साढ़े 10 बजे शव घर लेकर पहुंचे। घर से श्मशान घाट तक हजारों लोग अंतिम यात्रा में शामिल हुए। इस दौरान सुनील कुमार अमर रहें के नारे लगते रहे। श्मशान घाट पर शव से लिपटा तिरंगा इंस्पेक्टर के भाई को सौंपा गया। सांसद अरुण गोविल ने भी शहीद के परिवार को सांत्वना दी। सीएम योगी ने शहीद के परिजनों को 50 लाख मदद का ऐलान किया। परिवार के एक सदस्य को सरकारी नौकरी मिलेगी। एक सड़क का नामकरण भी शहीद के नाम पर किया जाएगा।

डल्लेवाल के लिए खनौरी बॉर्डर पर स्पेशल रूम बन रहा

चंडीगढ़ (एजेंसी)। पंजाब के खनौरी बॉर्डर पर किसान नेता जगजीत सिंह डल्लेवाल के आमरण अनशन का आज (गुरुवार) 59वां दिन है। मेडिकल ट्रीटमेंट लेने के बाद उनकी सेहत में कुछ सुधार हो रहा है। अब खनौरी बॉर्डर पर डल्लेवाल के लिए स्पेशल रूम तैयार किया जा रहा है। कमरा शीशे का है और पूरी तरह साउंड प्रूफ होगा। उसमें सूरज की रोशनी आसानी से आ सकेगी। कमरे के पास बाथरूम व अन्य सुविधाएं भी होंगी। अंदर गर्म पानी भी मिलेगा। इससे बनने में 2 दिन लग सकते हैं। जब तक यह बन नहीं जाता, तब तक उन्हें मोर्चे के पास ही मॉडर्न सुविधाओं से लैस ट्रॉली में रखा जाएगा।

बिहार में डीईओ के बेड से मिले 3 करोड़ कैश

बेतिया (एजेंसी)। बिहार में बेतिया के जिला शिक्षा अधिकारी रजनीकांत प्रवीण के पास से 3 करोड़ रुपए कैश और गहने बरामद किए गए हैं। गुरुवार अलसुबह विजिलेंस की टीम ने 40 सदस्यों के साथ रजनीकांत के 7 ठिकानों पर एक साथ रेड मारी। विजिलेंस की टीम बेतिया में 10 घंटे की छापेमारी के बाद झ्खड़ के घर से बाहर निकल गई है। हालांकि, अधिकारियों ने इस मामले में अभी तक कोई जानकारी नहीं दी है।

रजनीकांत के घर में रखे बेड में नोटों से भरी बोरियां छिपाकर

रखी गई थीं। इतना ज्यादा कैश मिलने के बाद अधिकारियों को नोट गिनने वाली मशीन लाना पड़ी। खुलासे के बाद डीईओ को निलंबित कर दिया गया है।

डीईओ रजनीकांत प्रवीण नालंदा के रहने वाले हैं। पत्नी सुषमा शर्मा बगहा, समस्तीपुर और दरभंगा में तीन स्कूल संचालित करती हैं। इन स्कूलों में भी विजिलेंस की टीम जांच कर रही है। साली पूनम शर्मा समस्तीपुर में ही श्रीकृष्णा हाई स्कूल में टीचर हैं। सास निर्मला शर्मा रिटायर्ड टीचर हैं।

पंजाब सीएम 26 जनवरी को अब मोहाली में तिरंगा फहराएंगे

फरीदकोट (एजेंसी)। पंजाब सीएम भगवंत मान को आतंकी संगठन सिख फॉर जस्टिस की ओर से बम से उड़ाने की धमकी मिलने के बाद उनके गणतंत्र दिवस (26 जनवरी) के कार्यक्रम में बदलाव कर दिया गया है।

अब वह फरीदकोट नहीं, बल्कि मोहाली में तिरंगा फहराएंगे। कार्यक्रम बदलने का फैसला पंजाब सरकार ने बुधवार देर रात लिया था। हालांकि, तब उनके कार्यक्रम की जगह तय नहीं की गई थी। आज सरकार की ओर से नोटिफिकेशन जारी कर इसकी सूचना दी गई है। वहीं, फरीदकोट में अब विधानसभा स्पीकर कुलतार सिंह संधवां तिरंगा फहराएंगे। इसके अलावा एसएफजे चीफ खालिस्तानी आतंकी गुरपतवंत सिंह पन्नू के खिलाफ फरीदकोट में एफआईआर दर्ज हो गई है। उसने सीएम मान को बम से उड़ाने की धमकी दी थी। पन्नू ने वीडियो जारी कर कहा था कि जो उल्टा चलता है, उसका हश्र पूर्व मुख्यमंत्री बेअंत सिंह जैसा होगा। पन्नू ने कहा कि फरीदकोट रेलवे स्टेशन और नेहरू स्टेडियम में उसने खालिस्तानी नारे लिखवाए हैं।

अहमदाबाद में हिंदू आध्यात्मिक मेला का उद्घाटन

अहमदाबाद (एजेंसी)। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह 10 दिनों में दूसरी बार यानी 23 जनवरी को अहमदाबाद पहुंचे। यहां जीएमडीसी ग्राउंड में उन्होंने हिंदू आध्यात्मिक मेले के उद्घाटन किया। मेले के उद्घाटन कार्यक्रम में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय कार्य समिति सदस्य सुरेश भैयाजी जोशी, केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह, मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल मौजूद रहे।

इस मौके पर आरएसएस के पूर्व सरकार्यवाह भैयाजी जोशी ने कहा कि अहिंसा के विचार की रक्षा के लिए हिंसा कभी-कभी जरूरी होती है। अपने धर्म की रक्षा के लिए हमें वे काम भी करने होंगे जिन्हें दूसरे लोग अधर्म करार देंगे। ऐसे काम हमारे पूर्वजों ने भी किए थे। साथ ही उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि भारत को शांति के रास्ते पर सभी को साथ लेकर चलना होगा।

उन्होंने महाभारत के युद्ध का हवाला देते हुए कहा कि पांडवों ने अधर्म को खत्म करने के लिए युद्ध के नियमों को ताक पर रख दिया था। इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि हिंदू धर्म में अहिंसा का तत्व निहित है। लेकिन, कभी-कभी हमें अहिंसा के विचार की रक्षा के लिए हिंसा का सहारा लेना पड़ता है। अन्यथा अहिंसा का विचार कभी सुरक्षित नहीं रहेगा। हमारे महान पूर्वजों ने हमें यह संदेश दिया था।

भैयाजी जोशी के मुताबिक भारत के लोगों को शांति के रास्ते पर सबको साथ लेकर चलना होगा। जो सबको साथ लेकर चलने में सक्षम है, वही शांति स्थापित कर सकता है। अगर कोई धर्म दूसरों को अपने-अपने धर्मों का पालन करने की अनुमति नहीं देता है तो शांति नहीं होगी। भारत के अलावा कोई भी ऐसा देश नहीं है जो सभी को साथ लेकर चलने में सक्षम हो। %वसुधैव कुटुंबकम% (दुनिया एक परिवार है) आध्यात्मिकता का हमारा विचार है।

फिल्ममेकर रामगोपाल वर्मा को 3 महीने की सजा

मुंबई (एजेंसी)। फिल्ममेकर रामगोपाल वर्मा को मंगलवार (21 जनवरी) को मुंबई की अंधेरी मजिस्ट्रेट कोर्ट ने चेक बाउंस मामले में तीन महीने की सजा सुनाई। कोर्ट ने कहा- रामगोपाल वर्मा शिकायतकर्ता को 90 दिन के भीतर 3.72 लाख रुपए देना होगा।

अगर ऐसा नहीं करते हैं, तो उन्हें तीन महीने की सजा और भुगतनी होगी। यह मामला पिछले 7 सालों से चल रहा था। सुनवाई के दौरान रामगोपाल वर्मा कोर्ट में मौजूद नहीं थे। इसके चलते उनके खिलाफ गैर-जमानती वारंट जारी किया गया है।

जमानत पर हैं रामगोपाल वर्मा रामगोपाल वर्मा की फर्म ने श्री नाम की एक कंपनी को चेक के जरिए 2.38 लाख रुपए का भुगतान किया था। यह चेक बाउंस हो गया। कंपनी ने महेशचंद्र मिश्रा के जरिए राम गोपाल पर केस दर्ज कराया था। 2022 में इस मामले में वर्मा को 5000 रुपए के निजी बॉन्ड पर जमानत मिल गई थी। अब कोर्ट ने उन्हें दोषी पाया और 3 महीने जेल की सजा सुनाई।

कोलकाता रेप-मर्डर केस की सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई 29 जनवरी को

नई दिल्ली (एजेंसी)। कोलकाता के आरजी कर मेडिकल कॉलेज में ट्रेनी डॉक्टर के साथ हुए रेप-मर्डर मामले की सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई 29 जनवरी तक के लिए टाल दी गई है। चीफ जस्टिस संजीव खन्ना, जस्टिस संजय कुमार और जस्टिस केवी विश्वनाथन की बेंच इस मामले को सुनेगी। सुप्रीम कोर्ट ने इस मामले को लेकर खुद संज्ञान लिया था। सुप्रीम कोर्ट ट्रेनी डॉक्टर के माता-पिता की याचिका पर भी सुनवाई करेगा, जिसमें उन्होंने कहा था कि वे सीबीआई की जांच से सहमत नहीं हैं। उन्होंने केस की फिर से जांच कराने की मांग की थी। 2 दिन पहले पहले सेशंस कोर्ट ने संजय रॉय को दोषी करार देते हुए उम्रकैद की सजा सुनाई। साथ ही 50 हजार रुपए का जुर्माना भी लगाया। कोर्ट ने कहा कि यह रेयरेस्ट ऑफ रेयर मामला नहीं है, इसलिए फांसी

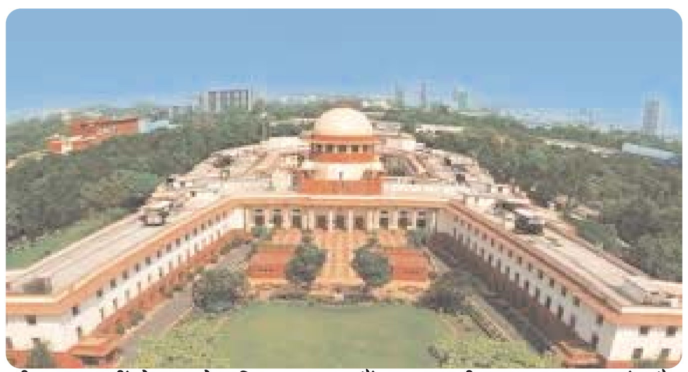

की सजा नहीं दे सकते। सियालदह कोर्ट के फैसले के खिलाफ पश्चिम बंगाल सरकार हाईकोर्ट पहुंची। सरकार ने हाईकोर्ट में याचिका दाखिल करते हुए कहा- संजय रॉय को उम्रकैद नहीं बल्कि फांसी की सजा होनी चाहिए।

मुझे इस मामले में फंसाया गया है। मैंने यह काम नहीं किया। जिन्होंने ये काम किया है, उन्हें जाने दिया गया। एक इसमें शामिल है। मैं रुद्राक्ष की माला पहनता हूं और अगर मैंने अपराध किया होता तो यह टूट जाती। ट्रेनी डॉक्टर का रेप-मर्डर केस 3 अदालतों में, लोअर कोर्ट में फैसला आया आरजी कर रेप-मर्डर केस निचली अदालत के साथ-साथ हाईकोर्ट और सुप्रीम कोर्ट में भी चल रहा है। दरअसल, कलकत्ता हाईकोर्ट में कई जनहित याचिकाओं के साथ पीड़ित के माता-पिता ने भी याचिका दायर की थी।

चायवाले ने फैलाई पुष्पक एक्सप्रेस में आग की अफवाह

जलगांव (एजेंसी)। महाराष्ट्र के जलगांव में 22 जनवरी को लखनऊ से मुंबई जा रही पुष्पक एक्सप्रेस के 23 यात्रियों को दूसरे ट्रैक पर आ रही कर्नाटक एक्सप्रेस ने कुचल दिया। हादसे में अब तक 13 लोगों की मौत हो चुकी है, जबकि 10 घायलों का इलाज जलगांव के सिविल अस्पताल में चल रहा है।

घटना के दौरान ट्रेन में मौजूद लोगों ने बताया कि आग लगने की अफवाह सबसे पहले एक चायवाले ने फैलाई थी। जिसे जनरल डिब्बे में सफर कर रहे उधल कुमार और विजय कुमार ने सुना। दोनों घबराकर चलती ट्रेन से कूद गए। इसके बाद किसी ने चेन पुलिंग की और कुछ अन्य पैसेंजर्स भी जान बचाने के लिए ट्रेन से कूद गए।

अफवाह के बाद ट्रेन में अफरातफरी का माहौल था। लोग जान बचाने के लिए ट्रेन से

निकलने की कोशिश में थे। कुछ लोग ट्रैक पर कूदे तो कुछ लोगों ने दूसरे दरवाजे से छलांग लगाई जहां ट्रैक नहीं था। चश्मदीद के मुताबिक अगर ट्रैक की ओर ही बाकी लोग भागते तो हादसा और बड़ा हो सकता था। जलगांव कलेक्टरेट ने बताया कि हादसे में जान गंवाने वाले 13 में से 10 लोगों की पहचान हो गई है। 3 की पहचान की जा रही है। कर्नाटक एक्सप्रेस से कटने के बाद कई लोगों की बॉडी टुकड़ों में बंट गई थी। रेस्क्यू टीम और आसपास के लोगों ने चादरों में इन टुकड़ों को इकट्ठा किया। हादसा 22 जनवरी को शाम 4ः42 बजे पाचोरा स्टेशन के पास हुआ था।

संक्षिप्त समाचार

आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी में बेहतर प्रदर्शन करना है लक्ष्य : श्रेयस

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय क्रिकेट टीम के मध्य क्रम के बल्लेबाज श्रेयस अय्यर का लक्ष्य अब आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी में भी एकदिवसीय विश्व कप 2023 की तरह शानदार बल्लेबाजी करना है। एकदिवसीय विश्व कप 2023 में अय्यर ने 11 पारियों में 530 रन बनाए थे। तब उन्होंने दो अर्धशतकों के के साथ ही न्यूजीलैंड के खिलाफ सेमीफाइनल मैच में शानदार शतक भी लगाया था। घरेलू क्रिकेट में बेहतर प्रदर्शन के बाद एक बार फिर से राष्ट्रीय टीम में वापसी करने में सफल हुए हैं। अय्यर को इंग्लैंड के खिलाफ एकदिवसीय और चैंपियंस ट्रॉफी के लिए टीम में शामिल किया गया है। वहीं इससे पहले खराब फॉर्म और शॉर्ट बॉल पर विकेट खोने के कारण उन्हें टीम से बाहर कर दिया गया था। अब अपने वापसी के बाद श्रेयस आलोचकों को भड़के हैं। उन्होंने कहा , यह बहुत ही परेशान करने वाला होता है जब आपको ऐसे लोग सलाह देते हैं जिन्होंने कभी भी 150 किलोमीटर प्रति घंट तेज गेंद कभी खेली भी नहीं है। उनको अधिकार है कि वे अपनी बात को रखें पर किसी खिलाड़ी को निशाना न बनायें।

एलएसजी तीन बाएं हाथ के बल्लेबाजों के साथ उतरेगी : जहीर

नई दिल्ली (एजेंसी)। लखनऊ सुपर जाइंट्स (एलएसजी) टीम के मेंटर जहीर खान ने कहा है कि इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) 2025 में लखनऊ सुपरजायंटस के पास बाएं हाथ के बल्लेबाज हैं। पिछले साल की मेगा नीलामी के दौरान लखनऊ ने पांच बाएं हाथ के बल्लेबाजों को खरीदा है। इसमें से तीन को अंतिम ग्यारह में जगह मिल सकती है। ऋषभ पंत, निकोलस पूरन और डेविड मिलर शुरुआत में उतरेंगे। साथ ही कहा कि तीन बाएं हाथ के बल्लेबाजों के होने से टीम का रुख आक्रामक रहेगा। जहीर के अनुसार इतने बांए हाथ के खिलाड़ी रखना टीम की रणनीति भी हो सकती है। एलएसजी ने इस सत्र के लिए ऋषभ को कप्तान बनाया है। 2016 में दिल्ली डेयरडेविल्स की कप्तानी करने वाले जहीर ने ऋषभ को देखा है और उनके साथ काम किया है। पूर्व भारतीय तेज गेंदबाज के अनुसार ऋषभ ऐसे व्यक्ति हैं जो पूरी टीम को प्रेरित कर सकते हैं और क्रिकेट का एक ऐसा ब्रांड स्थापित कर सकते हैं जिसे एलएसजी खेलना चाहता है। उन्होंने कहा कि सीजन में उस माहौल को बनाने और किसी भी टीम के लिए सफलता के स्तंभ तैयार करने के लिए कप्तान की भूमिका अहम होती है। जिसमें वह सक्षम हैं।

जंगल की आग से ओलंपिक, फीफा विश्वकप के आयोजन पर उठे सवाल

फ्लोरिडा (एजेंसी)। लॉस एंजिल्स के जंगलों में लगी आग के बाद यहां 2028 में होने वाले ओलंपिक खेलों पर सवाल उठने लगे हैं। यहां तक कि ओलंपिक को डलास या मियामी में स्थानांतरित करने की भी मांग उठी है। इसी को लेकर आयोजन समिति के प्रमुख कैसी वासरमैन ने गत दिनों अमरीकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प से मुलाकात की थी जिसमें ट्रम्प ने कहा था कि यह ओलंपिक अमरीका के हैं। इसलिए इस मामले में हर प्रकार से प्रयास किये जाएंगे जिससे कि खेल का सफल आयोजन हो सके। वहीं लॉस एंजिल्स में ही अगले साल फीफा विश्व कप के मैच भी होने हैं। यह स्थल जंगल की आग से प्रभावित क्षेत्रों के करीब है हालांकि इसके बाद भी मैचों को बाहर स्थानांतरित करने के लिए अभी तक कोई बातचीत नहीं हुई है। इस दौरान सुपर बाउल 2027 पर भी नजरें होंगी। वहीं कैलिफ़ोर्निया के गवर्नर गेविन न्यूसोम कहते हैं कि हमारे पास ओलिम्पिक, सुपर बाउल और फीफा विश्व कप की मेजबानी है। हमारे पास टीम है एक टीम है जो आयोजन की रूपरेखा तैयारी कर रही है। बता दें कि यह पहली बार नहीं है कि ओलंपिक का उपयोग किसी आपदा से तबाह हुए क्षेत्र को बदलने के माध्यम के रूप में किया जाएगा। ओलिम्पिक 14 जुलाई, 2028 को शुरू होने वाले हैं। ट्रम्प के पहले कार्यकाल के दौरान साल 2017 में अमरीका को इसकी मेजबानी मिली थी। लॉस एंजिल्स ने अंतिम बार 1984 में ओलिम्पिक की मेजबानी की थी। वहीं मीडिया दिग्गज चार्ली किर्क आदि ने खेलों को स्थानांतरित करने को किा था। किर्क ने कहा कि ओलंपि रद्द कर दिया जाना चाहिए। यदि आप फायर हाइड्रेंट नहीं भर सकते हैं, तो आप ओलिम्पिक की मेजबानी के योग्य नहीं हैं। उन्हें डलास या मियामी ले जाएं, ताकि दुनिया के एथलीट वास्तव में सुरक्षित रूप से कुछ बनाने और चलाने में सक्षम जगह पर प्रतिस्पर्धा कर सकें। वहीं लॉस एंजिल्स सिटी कौंसिल के पूर्व सदस्य माइक बोनिन, जिन्होंने ओलिम्पिक के समर्थन में मतदान किया था भी जंगल की आग रोकने में प्रशासन की नाकामी से निराश दिखे। उन्होंने कहा कि यह शहर की ओलिम्पिक आयोजित करने की क्षमता पर सवाल उठाता है। जंगल की आग से 150 वर्ग किलोमीटर से अधिक क्षेत्र जला है और साथ ही प्रशासन की जिम्मेदारियों पर सवाल उठाए हैं। इससे हुए नुकसान के बाद पुनर्निर्माण की लागत 135 अरब डॉलर से ज्यादा होने का अनुमान है। वहीं 17 दिन तक चलने वाले ओलिम्पिक पर 7 अरब डॉलर का खर्च आयेगा हालांकि ओलिम्पिक के 50 नियोजित स्थानों में से किसी पर भी प्रभाव नहीं हुआ है। रिवेरा कंट्री क्लब में ओलिम्पिक गोल्फ टूर्नामैंट की मेजबानी होनी है। वहीं सेपुलवेडा बेसिन मनोरंजन क्षेत्र, जो तीरंदाजी, बी.एम.एक्स. और स्केटबोर्डिंग कार्यक्रमों की मेजबानी करेगा पूरी तरह से सुरक्षित है।

सात्विक और चिराग की जोड़ी इंडोनेशिया मास्टर्स के दूसरे दौर में

जकार्ता । सात्विकसाईराज रंकीरेड्डी और चिराग शेट्टी की भारतीय जोड़ी ने यहां चीनी ताइपे के चेन झी रे और लिन यू चीह की जोड़ी के खिलाफ सीधे गेम में जीत के साथ इंडोनेशिया मास्टर्स सुपर 500 बैडमिंटन के दूसरे दौर में प्रवेश किया। एशियाई खेलों की चैम्पियन भारतीय जोड़ी ने अपने शुरुआती मैच में विश्व रैंकिंग में 38वें स्थान पर मौजूद चेन और लिन की जोड़ी को 21-16 21-15 से हराया। सात्विकसाईराज और चिराग की जोड़ी पिछले दो सप्ताह में दो सेमीफाइनल (मलेशिया ओपन सुपर 1000 और इंडिया ओपन सुपर 750) खेल चुकी है। विश्व रैंकिंग में 19वें स्थान पर काबिज तनीषा क्रास्टो और अश्विनी पोनप्पा की महिला युगल जोड़ी ने ओरनिचा जोंगसथापोर्नपार्न और सुकित्ता सुवाचाई की थाईलैंड की जोड़ी को 21-6 21-14 से हराया।

बीसीसीआई के इस दिशा निर्देश को सही नहीं मानते जोस बटलर

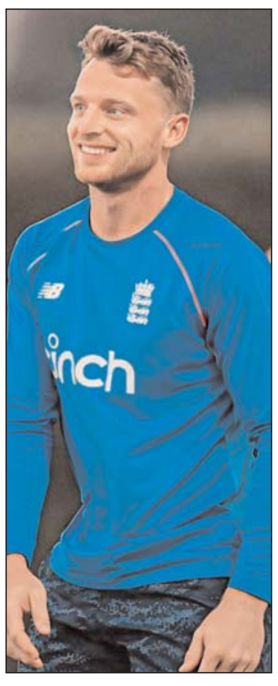

कोलकाता (एजेंसी)। इंग्लैंड के कप्तान जोस बटलर ने कहा है कि वह भारतीय बोर्ड (बीसीसीआई) के उस दिशा निर्देशों को सही नहीं मानते जिसमें कहा गया है कि विदेशी दौरे पर खिलाड़ियों का परिवार पूरे समय उनके साथ नहीं रह सकता है। इसके पीछे तर्क दिय गया है कि खिलाड़ी इससे पूरे समय खेल पर ध्यान नहीं दे पाते। वहीं बटलर का कहना है कि लंबे विदेश दौरों पर परिवार का साथ बहुत महत्वपूर्ण होता है और इससे खिलाड़ियों के प्रदर्शन पर अधिक प्रभाव नहीं पड़ता। बटलर के अलावा कई और दिग्गज भी इस नियम को सही नहीं मानते। वहीं कुछ इसे सही मानते हैं। भारत के टेस्ट और एकदिवसीय कप्तान रोहित शर्मा ने भी इस नियम को लेकर आंशका जताई है। बोर्ड के दिशा निर्देश के अनुसार खिलाड़ी तय समय से अधिक परिवार के साथ नहीं बिता सकते। बटलर ने कहा, 'यह काफी भारी सवाल है। यह अहम है। हम आधुनिक जगत में रह रहे हैं और दौरों पर परिवार का साथ रहना बहुत अच्छा है। उन्होंने कहा, 'आजकल इतना क्रिकेट खेला जा रहा है कि खिलाड़ी घर से बाहर काफी समय बिताते हैं,ऐसे में तो उन्हें साथ रहने का समय ही नहीं मिलो। कोरोना के बाद इस पर काफी चर्चा भी हुई है। मुझे नहीं लगता कि परिवार के साथ रहने से खेल पर बहुत फर्क पड़ता है। बटलर ने कहा कि परिवार के रहने से पेशेवर प्रतिबद्धताओं में बाधा नहीं आती। मेरा मानना है कि घर से दूर रहने का बोझ परिवार के साथ रहकर हल्का किया जा सकता है।

टी20 विश्व कप की योजनाओं को लेकर सूर्यकुमार ने दिया मजेदार जवाब

कोलकाता (एजेंसी)। भारतीय टी20 क्रिकेट टीम के कप्तान सूर्यकुमार यादव इंग्लैंड के खिलाफ टी20 सीरीज की शुरुआत से पहले मीडिया से बात करते हुए हंसी-मजाक के मूड में नजर आये। इस दौरान जब उनसे उनसे अगले साल होने वाले टी 20 विश्व कप की योजनाओं को लेकर सवाल किये गये तो उन्होंने हंसते हुए कहा कि सारे राज अभी ही बता दूं क्या। साथ ही कहा कि अभी यात्रा का आनंद लेने दो, हमें टीम भी तैयार करनी है, स्थिति देखनी है और एक ईकाई के तौर पर खेलना है। यही मेरा और कोच गौतम गंभीर का मानना है। वहीं टीम के उपकप्तान बने डिप्टी अक्षर पटेल ने कहा कि भारतीय टीम इंग्लैंड से टूर्नामेंट को ध्यान में रखते हुए अपने विकल्पों पर अधिक ध्यान देते हुए उनके आंकलन का प्रयास करेगी। अक्षर ने कहा कि एक साल में विश्व कप आ रहा है, इसलिए उसके लिए कैसे आगे बढ़ें इसपर हमें अभी से ध्यान देना होगा। यही इस सीरीज में हमारा मुख्य लक्ष्य है। साथ ही कहा कि लय हासिल करना सबसे अहम है कयोंकि अगर आप अच्छी शुरुआत करते हैं, तो आप इसे जारी रख सकते हैं।

कलारीपयट्टू पर छिड़ा विवाद, खेल को प्रतियोगिता सूची से हटाने पर खींचतान

नई दिल्ली (एजेंसी)। आगामी 28 जनवरी से उत्तराखंड में 38वें नेशनल गेम्स का आयोजन होना है। इन राष्ट्रीय खेलों में कई खेलों का आयोजन होगा लेकिन एक खेल या यूं कहें कि केरल का मार्शल आर्ट फॉर्म कलारीपयट्टू विवादों में छा रखा है। दरअसल, भारतीय कलारीपयट्टू महासंघ ने भारतीय ओलंपिक संघ (आईओए) पर आयोजन के प्रदर्शन खंड में मार्शल आर्ट को निष्कासित करने का आरोप लगाया है। 2023 में गोवा में आयोजित राष्ट्रीय खेलों के 37वें संस्करण में,कलारीपयट्टू प्रतियोगिता खंड का हिस्सा था। वहीं फेडरेशन ने कहा, इस साल कला को प्रदर्शन के लिए कार्यक्रमों की सूची में शामिल किया गया है, जिससे 18 राज्यों के लगभग 200 कलारीपयट्टू एथलीटों की पदक की उम्मीदें कम हो गई हैं, जो प्रतियोगिता में भाग लेने की योजना बना रहे थे। वहीं आईओए अध्यक्ष पीटी उषा ने केरल में कहा कि एसोसिएशन दिल्ली उच्च न्यायालय के आदेश के आधार पर एक हफ्ते के भीतर कलारीपयट्टू के भाग्य पर फैसला करेगा। दिल्ली ।ष्ट ने 15 जनवरी को आदेश दिया था कि, 38वें राष्ट्रीय खेलों में कलारीपयट्टू को प्रतिस्पर्धी खेल के रूप में बहाल करने के लिए उचित निर्णय लिया जाएगा। अदालत का आदेश कलारीपयट्टू छात्रा हर्षिता यादव द्वारा दायर एक रिट याचिका पर आधारित था। केरल में आयोजित 35वें राष्ट्रीय खेलों में, कलारी एक प्रदर्शन कार्यक्रम था। यह प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी का दृष्टिकोण था, जिन्होंने स्वदेशी कला रूपों को बढ़ावा देने पर जोर दिया, जिसके कारण 37वें खेलों में कलारीपयट्टू को प्रतियोगिता खंड में शामिल किया गया। यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि आईओए ने इस दृष्टिकोण को खत्म कर दिया और कलारीपयट्टू को हाशिये पर धकेल दिया। भारतीय कलारीपयट्टू महासंघ के उपाध्यक्ष पीबी सुमेश ने द इंडियन एक्सप्रेस को बताया। फेडरेशन 18 राज्यों में कलारीपयट्टू छात्रों का प्रतिनिधित्व करता है। सुमेश ने कहा, मार्शल आर्ट फॉर्म अंडर-17 खेलो इंडिया गेम्स में तीन बार प्रतिस्पर्धी कार्यक्रम रहा है। यह निर्णय कि कलारीपयट्टू प्रतियोगिता अनुभाग का हिस्सा नहीं होगा, उस दिन ही पता चला था, जब आईओए ने दिसंबर 2024 में राष्ट्रीय खेलों की खेल सूची सार्वजनिक की थी। पीटी उषा ने तब कहा था।

दिग्गज मनीषा मल्होत्रा का बयान, कहा-

टेनिस को बचाना है तो आमूलचूल बदलाव करने होंगे

नई दिल्ली (एजेंसी)। पूर्व ओलंपियन और एशियाई खेलों की रजत पदक विजेता पूर्व टेनिस खिलाड़ी मनीषा मल्होत्रा ने भारत में टेनिस की मौजूदा स्थिति के लिये इसके प्रशासकों को दोषी ठहराते हुए कहा कि अगर देश में इस खेल को बचाना है तो आमूलचूल बदलाव करने होंगे। पुरुष एकल में सुमित नागल 91वें स्थान के साथ भारत के शीर्ष खिलाड़ी हैं लेकिन उनके प्रदर्शन में निरंतरता की कमी रही है। रोहन बोपन्ना पुरुष युगल में 16वें स्थान के साथ भारत के शीर्ष खिलाड़ी हैं लेकिन 44 बरस की उम्र में वह अपने करियर के अंतिम चरण में हैं। महिला एकल में भारत की कोई खिलाड़ी शीर्ष 200 में भी शामिल नहीं है जबकि महिला युगल में भी देश की कोई खिलाड़ी शीर्ष 100 का हिस्सा नहीं है। महेश भूपति के साथ मिलकर 2002 बुसान एशियाई खेलों में मिश्रित युगल का स्वर्ण पदक जीतने वाली मनीषा ने देश में टेनिस के गिरते स्तर के लिए खेल का संचालन करने वाले अधिकारियों को जिम्मेदार ठहराया। इंस्पायर इंस्टीट्यूट ऑफ स्पोर्ट की अध्यक्ष मनीषा ने 'भाषा' से विशेष बातचीत के दौरान कहा, ''वर्तमान में टेनिस की कहानी काफी दुखद है। मैं सोचने लगती हूं कि टेनिस इतना अच्छा खेल था जहां हमारे पास इस खेल की इतनी अच्छी विरासत थी। रामानाथन कृष्णन के समय से ही ऐसा था जिसे हमने पूरी तरह से खत्म कर दियाहै।'' उन्होंने कहा, ''आज की तारीख में अगर कोई प्रगति नहीं है, कोई खिलाड़ी नहीं है तो यह हमारी ही गलती है। मुझे यह देखकर काफी दुख होता है क्योंकि मैं आज जो भी हूं टेनिस की वजह से हूं। मेरे जीवन में जो कुछ भी है, वह टेनिस की वजह से है। मैं इस बारे में कुछ कर नहीं पा रही हूं जो बैठे हैं (अधिकारी) वे कर भी नहीं रहे और जो कर रहे हैं वह खराब कर रहे हैं।'' इस पूर्व खिलाड़ी ने कहा, ''बहुत से टेनिस खिलाड़ी मेरे साथ हैं जो यह सोच रहे हैं कि हम बहुत खराब स्थिति में पहुंच चुके हैं और अगर हमें टेनिस को बचाना है तो आमूलचूल बदलाव करने होंगे।'' मनीषा ने कहा कि टेनिस साथ पिछले कुछ समय में बड़ी समस्या यह रही कि जिन लोगों ने इसका संचालन किया उनके पास कोई योजना और रणनीति ही नहीं थी। सिडनी ओलंपिक 2000 में भारत का प्रतिनिधित्व करने वाली मनीषा ने कहा, ''टेनिस की समस्या यह है कि हमारे पास संचालन को लेकर कोई योजना नहीं थी। जो महासंघ चला रहे थे, उन्होंने कोई ढांचा और व्यवस्था नहीं बनाई।'' उन्होंने कहा, ''हमारे पास कोई जूनियर विकास कार्यक्रम नहीं था और ना ही शिक्षण कार्यक्रम था। जो भी टेनिस खिलाड़ी पैदा हुए हैं या जिन्होंने भी कुछ हासिल किया है, अपने दम पर किया है। उनके अपने क्लब है, अपने माता-पिता से मदद ली। कोई ढांचागत प्रणाली नहीं थी।'' मनीषा ने कहा, ''जो भी लोग महासंघ का हिस्सा थे उन्होंने कभी इस पर ध्यान नहीं दिया कि टेनिस के विकास में कैसे सुधार करें।

पंड्या को खेलते हुए देखना पसंद है : कामरान अकमल

इस्लामाबाद (एजेंसी)। पाकिस्तान के पूर्व विकेटकीपर बल्लेबाज कामरान अकमल ने कहा है ऑलरांउडर हार्दिक पंड्या उनके पसंदीदा खिलाड़ी है। अकमल ने कहा कि उन्हें पंड्या को खेलते हुए देखना पसंद है और वह चाहते हैं कि इस क्रिकेटर को आईसीसी चैम्पियंस ट्रॉफी के लिए अंतिम ग्यारह में जगह मिलनी चाहिये। हार्दिक एकदिवसीय विश्व विश्व कप 2023 के दौरान हार्दिक भारतीय टीम में शामिल थे पर बीच में ही चोटिल होकर बाहर हो गये थे। कामरान ने कहा कि भारतीय टीम में मुख्य खिलाड़ी पंड्या हैं, उनके बिना अंतिम ग्यारह पूरी नहीं होतीअधूरी है। वह बल्ले और गेंद से अपने प्रदर्शन से प्रभावित करते हैं। वह खेल को समाप्त भी करते हैं। हार्दिक ने भारतीय टीम की ओर से 86 एकदिवसीय मैचों में 34.01 की औसत से 1,769 रन बनाए हैं, जिसमें 92 उनका सर्वश्रेष्ठ स्कोर हैं। कामरान के अलावा, भारत के पूर्व क्रिकेटर सुरेश रैना ने भी हाल ही में कहा था कि आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी में पंड्या अहम भूमिका निभा सकते हैं। रैना ने कहा कि ये देखना होगा कि वह कब गेंदबाजी करते हैं और क्या वह कुलदीप यादव के साथ मिलकर गेंदबाजी करते हैं। चैम्पियस ट्रॉफी में रोहित शर्मा टीम के कप्तान होंगे जबकि शुभमन गिल उपकप्तान होंगे। यह टूर्नामेंट 19 फरवरी से 9 मार्च तक चलेगा।

पूर्व क्रिकेटर ने चहल को लेकर बीसीसीआई और टीम मैनेजमेंट पर लगाए आरोप

मुम्बई (एजेंसी)। आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी 2025 के लिए टीम इंडिया का ऐलान होने के कई दिनों के बाद भी इस चर्चा जारी है। कोई करुण नायर तो कई संजू सैमसन और मोहम्मद सिराज के टीम में ना होने को लेकर चितिंत है तो कोई सूर्यकुमार यादव को टीम में शामिल ना किए जाने से नाराज है। इस बीच अब युजवेंद्र चहल को लेकर एक बयान सामने आया है, जिसमें पूर्व क्रिकेटर और मौजूदा कमेंटेटर आकाश चोपड़ा ने कहा है कि बीसीसीआई और टीम मैनेजमेंट ने चहल का इंडिया का करियर तबाह कर दिया। आकाश चोपड़ा ने कहा है कि बिना किसी कारण के युजवेंद्र चहल का करियर खत्म कर दिया गया, यहां तक कि दो साल पहले टीम से ड्रॉप होने से पहले उनका रिकॉर्ड ह्ष्ठढ्ढ क्रिकेट में दमदार था। अपने यूट्यूब चैनल पर बात करते हुए आकाश चोपड़ा ने इंडिया की वनडे टीम को लेकर बात की और कहा कि खराब प्रदर्शन ना करने के बावजूद युजवेंद्र चहल को बाहर कर दिया गया। पूर्व क्रिकेटर ने कहा कि, युजवेंद्र चहल पूरी तरह से फिनिश हो चुके हैं। उनकी फाइल बंद कर दी गई है। मुझे नहीं पता कि उन्होंने ऐसा क्यों किया? ये एक दिलचस्प मामला है। उन्होंने आखिरी बार जनवरी 2023 में खेला था। इसलिए उन्हें दो साल हो गए हैं। उनके आंकड़े भी बहुत अच्छे हैं। उन्होंने बहुत सारे विकेट लिए हैं और लगातार अच्छा प्रदर्शन कर रहे हैं। 72 वनडे मैचों में 121 विकेट निकालने वाले चहल ने अगस्त 2023 से इंटरनेशनल क्रिकेट नहीं खेली। कलाई के स्पिनर ने विजय हजारे ट्रॉफी नहीं खेली। इसके पीछे का कारण ये भी हो सकता है कि उनके जीवन में उथल-पुथल मची हुई है। ऐसे में आकाश चोपड़ा ने कहा है कि आप दो साल टीम से बाहर हैं तो आप चैंपियंस ट्रॉफी 2025 के दावेदारों में ही शामिल नहीं हैं। उन्होंने कहा कि, क्योंकि इसे बंद हुए दो साल हो गए हैं, इसलिए यहां युजी के लिए भी कोई जगह नहीं है, क्योंकि जैसे ही आप अचानक से उन्हें चुनते हैं, इसे एक प्रतिगामी कदम के रूप में देखा जाएगा।

राष्ट्रमंडल खेल 2026 में मुक्केबाजी की जगह कुश्ती को शामिल किया जाना चाहिए था : एरिका वीब

नई दिल्ली (एजेंसी)। पूर्व ओलंपिक चैंपियन पहलवान एरिका वीब ने 2026 राष्ट्रमंडल खेलों से कुश्ती को बाहर करने को बेहद निराशानजक करार दिया लेकिन साथ ही उम्मीद जताई कि अगले सत्र में खेल की वापसी होगी। कनाडा की एरिका ने2016 रियो ओलंपिक की महिला75 किग्रा फ्रीस्टाइल स्पर्धा के फाइनल में कजाखस्तान की गुजेल मेन्युरोवा को पछाड़कर स्वर्ण पदक जीता था। यूनाईटेड वर्ल्ड रेस्लिंग (यूडब्ल्यूडब्ल्यू) और आईएसएस के सहयोग से यहां चल रहे अंतरराष्ट्रीय महिला कुश्ती शिविर और 'रेस्लिंग मास्टरक्लास' कार्यक्रम के लिए यहां इंस्पायर इंस्टीट्यूट ऑफ स्पोर्ट आई एरिका ने वकालत की कि 2026 राष्ट्रमंडल खेलों में मुक्केबाजी की जगह कुश्ती को शामिल किया जाना चाहिए था। एरिका ने 'भाषा' को दिए विशेष साक्षात्कार में कहा, ''ग्लासगो में 2026 राष्ट्रमंडल खेलों का फैसला बहुत निराशाजनक था। उन्होंने खेलों के लिए एक बहुत ही अलग मॉडल अपनाया। उनके पास केवल 10 खेल हैं। यह बेहद निराशाजनक बात है। मैं वास्तव में चाहती थी कि वे मुक्केबाजी की जगह कुश्ती को शामिल करते।'' उन्होंने कहा, ''मुझे लगता है कि इस खेल (कुश्ती) की लोगों तक अधिक पहुंच है। मुझे लगता है कि महासंघ बेहतर स्थिति में है। मुझे लगता है कि यह राष्ट्रमंडल में भारत और नाइजीरिया की मौजूदगी में कुश्ती के खेल में शानदार खिलाड़ियों के रूप में अपनी विविधतापूर्ण ताकत दिखाने का एक अवसर है।'' कनाडा की इस पहलवान ने कहा, ''और इसलिए, हां, यह निराशाजनक है। मुझे लगता है कि चीजें बदलेंगी। हम नहीं जानते कि भविष्य में क्या होने वाला है और इसलिए मुझे उम्मीद है कि शायद 2030 के राष्ट्रमंडल खेलों में हम कुश्ती की वापसी देखेंगे।'' बुडापेस्ट 2018 विश्व चैंपियनशिप की कांस्य पदक विजेता एरिका ने ओलंपिक पदक विजेता भारतीय पहलवान बजरंग पूनिया की प्रशंसा की और कहा कि भारत में महिला कुश्ती में शानदार आदर्श मौजूद हैं। उन्होंने कहा, ''मैं बहुत से भारतीय खिलाड़ियों, खासकर पहलवानों की सराहना करती हूं। मैंने बजरंग के लिए मैट पर और मैट के बाहर सम्मान के बारे में बहुत बात की है, वह एक शानदार पहलवान, अविश्वसनीय सहयोगी है। भारत में महिला फ्रीस्टाइल कुश्ती में शानदार आदर्श मौजूद हैं। बुडापेस्ट विश्व चैंपियनशिप 2018 की कांस्य पदक विजेता एरिका ने कहा, ''मैं फोगाट बहनों, साक्षी मलिक और विनेश के बारे में सोचती हूं, जो ना केवल मैट पर चैंपियन रही हैं, बल्कि जिस तरह से वे खुद को संभालती हैं और मैट के बाहर जिस तरह चीजों के लिए खड़ी होती हैं, वह मेरे लिए बेहद प्रेरणादायक है। एरिका ने कहा कि एशियाई स्तर पर कुश्ती में प्रतिस्पर्धा बहुत कठिन है और एशियाई पहलवानों की कुश्ती की शैली अलग तरह की है। उन्होंने कहा, ''मुझे लगता है कि एशियाई पहलवानों की कुश्ती की शैली बहुत ही अनोखी है, इतने सारे देशों की मौजूदगी में प्रतिस्पर्धा बहुत कठिन है, खासकर कम भार वाले वजन वर्गों में, वे बहुत प्रतिस्पर्धी, बहुत तेज, तकनीक रूप से सक्षम हैं, उन्हें खेलते हुए देखना शानदार होता है। राष्ट्रमंडल खेल 2014 की चैंपियन एरिका ने कहा, ''मुझे 2023 एशियाई चैंपियनशिप के लिए कजाखस्तान जाने का मौका मिला। मैं 2025 एशियाई चैंपियनशिप के लिए जॉर्डन के अम्मान में रहूंगी। मैं कुश्ती की क्षमता, उत्साह, ऊर्जा को देखने के लिए वास्तव में उत्साहित हूं जो हम एशिया में कुश्ती की शैली में देखते हैं।

8 साल से अधूरा पड़ा सीवर प्रोजेक्ट

सतना में सांसद ने दूसरे दिन 12 वार्डों का दौरा किया, बदहाल सड़क से लोग परेशान

मीडिया ऑडीटर, मैहर (निप्र)। सतना जिले में सांसद गणेश सिंह ने गुरुवार को अपनी पदयात्रा के दूसरे दिन शहर के 12 वार्डों का दौरा किया। महुआ बस्ती से शुरू हुई यह यात्रा संग्राम कालोनी हरिजन बस्ती तक 14 किलोमीटर तक चली, जिसमें स्मार्ट सिटी की वास्तविक स्थिति का जायजा लिया गया।

यात्रा के दौरान सबसे बड़ी समस्या सीवर लाइन प्रोजेक्ट की निकलकर सामने आई। 8 साल से चल रहा यह प्रोजेक्ट शहर के लिए अभिशाप बन गया है। अब तक केवल 400 किलोमीटर सीवर लाइन बिछाई गई है, जो प्रति वर्ष औसतन मात्र 50 किलोमीटर की धीमी गति दिखाता है। नगर निगम के अनुसार, शहर के बाजार क्षेत्र में अभी भी 95 किलोमीटर सीवर लाइन का काम शेष है।

स्थानीय नागरिकों ने सांसद सिंह के सामने बदहाल सड़कों की समस्या रखी। जहां सीवर लाइन बिछाई जा चुकी है, वहां भी मिट्टी के ढेर अभी तक नहीं हटाए गए हैं। तकनीकी विशेषज्ञों का कहना है कि वर्तमान गति से काम जारी रहा, तो प्रोजेक्ट को पूरा होने में अभी भी डेढ़ साल का समय लग सकता है। पदयात्रा के दौरान मौजूद नगर निगम के अधिकारी जनता की शिकायतों से बचते दिखाई दिए। वर्तमान में खेरमाई रोड पर सीवर लाइन की खुदाई का काम चल रहा है।

जिसका नतीजा यह है, कि यहां एक ट्रक यहां धंस गया, जिसे काफी मशक्कत के बाद निकाला गया। सीवर प्रोजेक्ट के बेतरतीब काम के कारण हर साल लोग गड्ढे और कीचड़ से जूझते हैं। 8 साल पहले जब सीवर लाइन बिछाने का काम शुरू हुआ, तो दावा किया गया था कि आने वाले साल में नदी-नालों में सीवेज का गंदा पानी मिलना बंद हो जाएगा। शहर के मच्छर मुक्त होने की बात की गई थी। लेकिन, अभी तक केवल सीवर बिछाने का काम ही चल रहा है।

आवागमन में हो रही मुश्किल: सीवर लाइन बिछाने के अधूरे और बेतरतीब काम के कारण कई इलाकों में ऊबड़-खाबड़ सड़कों पर लोगों की आवाजाही मुश्किल हो रही है। आए दिन आवागमन के दौरान वाहन धंस रहे हैं। रोजाना हादसे हो रहे हैं, लोग चोटिल हो रहे हैं। जिम्मेदार सीवर प्रोजेक्ट के मामले पर सिर्फ रिव्यू और समीक्षा का खेल कर रहे हैं। पूर्व में ठेके निरस्त भी किए गए हैं। ठेकेदार पर कई बार जुर्माना की कार्रवाई की गई है। इसके बाद भी नतीजा सिफर है।

दूसरी कंपनी कर रहीं काम: टेंडर रेट से कम पर सीवर प्रोजेक्ट का ठेका लेने वाली दिल्ली की केके स्पन कंपनी शुरू से ही विवादों में रही है। काम की धीमी गति को देखते हुए पूर्व निगमायुक्त प्रतिभा पाल ने सीवर लाइन के काम पर रोक लगा दी थी। वहीं पूर्व निगमायुक्त प्रवीण सिंह ने नवंबर 2018 में सीवर लाइन के काम की धीमी प्रगति पर कार्रवाई करते हुए ठेका एजेंसी पर 3 करोड़ का जुर्माना लगाया था।

इस कार्रवाई में ठेका एजेंसी ने शहर में कुल 47 किमी सीवर लाइन ही डाली थी। निगम प्रशासन की सख्ती के बाद सीवर लाइन के निर्माण काम में तेजी की उम्मीद लगाई जा रही थी, लेकिन न तो काम की गुणवत्ता में सुधार आया और न की काम की गति बढ़ी।

ये कार्ययोजना थी:-

2016 में हुई थी शुरुआत

495 किलोमीटर बिछाई जाना थी सीवर लाइन

400 किलोमीटर सीवर लाइन बिछाई

200 करोड़ रुपए खर्च

42 एमएलडी का प्लांट

3 सीवर प्लांट

1 प्लांट चालू

यहां प्लांट, सतना नदी, धवारी, कृपालपुर

55 हजार देना है कनेक्शन

191 करोड़ का प्रोजेक्ट, पहुंचा 200 करोड़ पार

ठेका कंपनी, पीसी स्नेहिल, इन विराट

निगरानी एजेंसी, पीडीएमसी, 6 अभियंता, 3 एई, 3 सब इंजीनियर, 1 कार्यपालन यंत्री

2024 तक प्रोजेक्ट पूरा करने की डेट थी

2025 का आगाज, 95 किमी शेष।

कालिका देवी क्रिकेट टूर्नामेंट में रोमांचक मुकाबला

अगरहुंणा ने सरैयां को 69 रन से और कोठिलिहाई ने शिवरामपुर को 46 रन से हराया

मीडिया ऑडीटर, चित्रकूट (निप्र)। चित्रकूट के पुरवा तरौहां गांव में चल रहे मां कालिका देवी क्रिकेट टूर्नामेंट के सातवें दिन दो रोमांचक मुकाबले खेले गए। पहले लीग मैच में अगरहुंणा ने सरैयां को 69 रन से हराया, जबकि दूसरे क्वार्टर फाइनल में कोठिलिहाई ने शिवरामपुर को 46 रन के अंतर से पराजित किया।

पहले मैच में अगरहुंणा की टीम ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करते हुए सत्यम के धमाकेदार 30 रनों (14 गेंद) की मदद से 177 रनों का मजबूत स्कोर खड़ा किया। जवाब में सरैयां की टीम 108 रन ही बना सकी। अगरहुंणा के देवा ने शानदार ऑलराउंड प्रदर्शन करते हुए 25 रन बनाने के साथ 3 विकेट भी झटके, जिसके लिए उन्हें मैन ऑफ द मैच चुना गया।

बल्लेबाजी करते हुए 145 रनों का लक्ष्य दिया: दूसरे मैच में कोठिलिहाई ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 145 रनों का लक्ष्य दिया, जिसके जवाब में शिवरामपुर की टीम 100 रनों पर सिमट गई। कोठिलिहाई के आकाश ने 4 विकेट लेने के साथ 10 रन भी बनाए और मैन ऑफ द मैच का पुरस्कार जीता।

कॉमेंट्री हिमांशु त्रिवेदी और इब्रान ने की: टूर्नामेंट में भाजपा ओबीसी मोर्चा के जिलाध्यक्ष लवलेश निषाद और जिला उपाध्यक्ष सुनील सिंह पहले मैच के मुख्य अतिथि रहे। वहीं दूसरे मैच में अम्बेडकर वाहिनी के राष्ट्रीय सचिव मान सिंह पटेल और समाजवादी पार्टी के पूर्व नगर अध्यक्ष समीर विश्वकर्मा विशेष रूप से उपस्थित रहे।

मैच का संचालन आशीष और पवन यादव ने अंपायर के रूप में किया, जबकि स्कोरर की भूमिका अभिषेक द्विवेदी और अनिल वर्मा ने निभाई। कॉमेंट्री हिमांशु त्रिवेदी और इब्रान ने की। मीडिया प्रभारी पवन मिश्रा के अनुसार, अगले मुकाबले में बदौसा और अतर्रा के बीच तीसरा क्वार्टर फाइनल खेला जाएगा।

जमीन बंटवारे के विवाद में किया पिता का मर्डर

आरोपी बेटा गिरफ्तार, पिता को धक्का देने से हुई थी मौत

मीडिया ऑडीटर, मैहर (निप्र)। सतना में जमीन बंटवारे को लेकर हुए विवाद में पिता की हत्या के आरोपी बेटे को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। कोठी थाना पुलिस ने आरोपी को न्यायालय में पेश किया, जहां से उसे जेल भेज दिया गया।

थाना प्रभारी श्वेता मौर्य के अनुसार, कोठी निवासी 52 वर्षीय वीरेंद्र माली का अपने बेटे सुरेंद्र माली से जमीन बंटवारे को लेकर विवाद हुआ था। 5 जनवरी को हुए इस विवाद में सुरेंद्र ने अपने पिता के साथ मारपीट की और धक्का दे दिया, जिससे वीरेंद्र के सिर पर गंभीर चोट आई।

घायल वीरेंद्र को उनके बड़े बेटे देवेंद्र ने पहले सतना जिला अस्पताल में भर्ती कराया। हालत गंभीर होने पर रीवा रेफर किया गया, जहां इलाज के दौरान उनकी मृत्यु हो गई। घटना के बाद से फरार चल रहे आरोपी सुरेंद्र को साइबर सेल और मुखबिरों की सूचना के आधार पर गुरुवार को गिरफ्तार किया गया।

स्कूल की जर्जर दीवार गिरी, दिव्यांग किशोर की मौत

हैंडपंप पर पानी पीने गया था, ग्रामीणों बोले-शिकायत के बाद भी नहीं हुई कार्रवाई

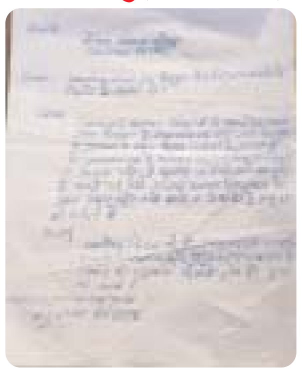

मीडिया ऑडीटर, मैहर (निप्र)। सतना जिले के कोटर थाना क्षेत्र में स्थित इटौरा गांव में बंद पड़े स्कूल की दीवार गिर गई। जिसमें दबकर एक दिव्यांग बच्चे की मौत हो गई। घटना बुधवार दोपहर तीन बजे की है।

दरअसल, अतुल सिंह (मृतक) स्कूल की दीवार के पास लगे हैंडपंप से पानी पी रहा था। उसका साथी सागर दहिया (14) हैंडपंप चला रहा था। अचानक ही सालों से बंद पड़े स्कूल की दीवार ढह गई और अतुल मलबे में दब गया। उसकी चीख-पुकार सुनकर परिजन और ग्रामीण मौके पर पहुंचे। मलबा हटाकर गंभीर रूप से घायल अतुल को निजी वाहन से जिला अस्पताल ले जाया गया, जहां इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई। गुरुवार को जिला अस्पताल में शव का पोस्टमार्टम किया जा रहा है।

ग्रामीणों ने कई बार पत्र लिखकर की शिकायत: ग्रामीण रामकिशोर दाहिया और भोले का आरोप है कि प्राथमिक शाला की इमारत और उसकी चारदीवारी की जर्जर स्थिति के बारे में शिक्षा विभाग और अन्य संबंधित विभागों को कई बार सूचित किया गया था। लेकिन किसी ने भी इस ओर ध्यान नहीं दिया। प्रशासनिक लापरवाही के कारण एक दिव्यांग किशोर की जान चली गई, जबकि दूसरा किशोर बाल-बाल बच गया। हम 15 सालों से लगातार इस दीवार को गिराने की मांग कर रहे थे। 2022 में हमने आखिरी बार पत्र लिखा था, लेकिन विभाग की ओर से कोई कार्रवाई नहीं हुई।

खाद-बीज की दुकान से 5 लाख की धोखाधड़ी

किराए की स्कार्पियो से माल भरकर फरार हुए पिता-पुत्र, मऊ पुलिस ने दबोचा

मीडिया ऑडीटर, मऊ/चित्रकूट (निप्र)। मऊ पुलिस ने खाद-बीज की दुकान के माध्यम से बड़ी धोखाधड़ी करने वाले पिता-पुत्र को गिरफ्तार किया है। गोरखपुर जिले के गगहा थाना क्षेत्र के चड़ेरिया गांव के रहने वाले जोखन यादव और उनके पुत्र दीपक ने लालता रोड़ पर खाद-बीज की दुकान खोलकर लोगों को चूना लगाया।

आरोपी पिता-पुत्र ने एक किराए की स्कार्पियो और मोटरसाइकिल का इस्तेमाल कर अपनी योजना को अंजाम दिया। 29 सितंबर को दुकान से सरसों का हाइब्रिड बीज, स्प्रे मशीन और कृषि दवाएं स्कार्पियो में भरकर फरार हो गए। आर्थिक तंगी के कारण बाद में उन्होंने स्कार्पियो को बेच दिया।

छापेमारी में कई सामान बरामद: मऊ थाना प्रभारी विनोद कुमार राय के नेतृत्व में पुलिस को सूचना मिली कि जोरवारा नहर के पास दो व्यक्ति कम दाम पर सामान बेच रहे हैं। मौके पर पहुंची पुलिस ने दोनों आरोपियों को धर दबोचा। तलाशी में उनके पास से 5,000 रुपये नकद, सरसों के बीज का एक पैकेट, एक स्प्रे मशीन, एक बोतल कृषि दवा और मोटरसाइकिल बरामद की गई। इस सफल गिरफ्तारी में उपनिरीक्षक ओम प्रकाश सिंह, आरक्षी सोनपाल सिंह और शुभम त्रिपाठी की टीम का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

चकबंदी कार्यों में लापरवाही पर 2 लेखपालों का वेतन रोका, समीक्षा के दौरान हुआ खुलासा, 56 गांवों में चल रही प्रक्रिया

मीडिया ऑडीटर, चित्रकूट (निप्र)। चित्रकूट में चकबंदी कार्यों की समीक्षा के दौरान बड़ी कार्रवाई की गई है। अपर जिलाधिकारी न्यायिक व उप संचालक चकबंदी राजेश प्रसाद ने कार्यों में लापरवाही बरतने वाले दो लेखपालों का वेतन रोकने के आदेश दिए हैं। जिले में वर्तमान में 56 गांवों में चकबंदी प्रक्रिया चल रही है, जिनमें से 20 गांव धारा 7 के अंतर्गत आते हैं। विशेष रूप से तौरा के लेखपाल उमेश पांडेय द्वारा कोई सरकारी कार्य नहीं किया जा रहा था। वहीं, लेखपाल शशिकांत ने बिना कार्य किए झूठी रिपोर्ट प्रस्तुत की। इन दोनों के खिलाफ विभागीय कार्रवाई के निर्देश दिए गए हैं।

समीक्षा में पाया गया कि अर्की, सिंधौली, तौरा, दरसेड़ा, नांदी और वीरधुमाई में चकबंदी कार्य ठप पड़ा है। जिलाधिकारी शिवशरणप्पा जीएन ने स्पष्ट किया है कि चकबंदी कार्यों में लापरवाही बरतने वालों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाएगी। वर्तमान में धारा 8 के तहत भटरी व चनहट में पड़ताल चल रही है। धारा 10 के अंतर्गत 5 गांव, धारा 20 के तहत 10 गांव तथा धारा 27 के तहत खरूही, खरौंध और छेछरिहा बुजुर्ग में अंतिम अभिलेख तैयार किए जा रहे हैं। ग्राम बगरेही के धारा 52 के प्रकाशन के लिए चकबंदी आयुक्त लखनऊ को पत्र प्रेषित किया गया है।

स्वयं की सतर्कता ही साइबर फ्राड से बचने का बेहतर उपाय है: कलेक्टर

साइबर सुरक्षा जागरूकता अभियान के तहत दी गई जानकारी

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। भारतीय स्टेट बैंक द्वारा म.प्र. पुलिस के साथ जागरूकता अभियान संचालित कर आमजनों को साइबर सुरक्षा एवं साइबर क्राइम से बचाव के बारे में जागरूक किया जा रहा है। गुरूवार को कलेक्ट्रेट परिसर सतना में कलेक्टर अनुराग वर्मा द्वारा साइबर सुरक्षा जागरूकता अभियान का शुभारंभ किया गया। इस अवसर पर कलेक्टर वर्मा ने जागरूकता वाहन को हरी झंडी दिखाकर रवाना भी किया। कार्यक्रम में नुक्कड़ नाटक के जरिए वित्तीय लेन-देन एवं बैंकिंग धोखाधड़ी की घटनाओं से बचाव के तरीके बताए गए। साथ ही अपराध घटित होने पर आवश्यक हेल्पलाइन नंबर की जानकारी भी दी गई। इस दौरान यह भी बताया गया कि मोबाइल पर आने वाले अवांछित कॉल पर ओटीपी शेयर न करें। किसी भी अप्रिय घटना पर तत्काल पुलिस को अवगत कराएं।

कलेक्टर वर्मा ने कहा कि इस समय साइबर फ्राड का सबसे बडा माध्यम बन गया है। स्वयं की सतर्कता ही साइबर फ्राड से बचने का बेहतर उपाय है। डिजिटल आरेस्ट, फर्जी फेसबुक प्रोफाइल सहित पैटर्न बदलकर साइबर फ्राड के मामले आये दिन सामने आ रहे हैं। इस तरह के फ्राड में फसने की जरूरत नहीं है। ऐसी स्थिति आने पर डरे नहीं सतर्कता के साथ पुलिस को जानकारी दें। परिवार या सहयोगियों के साथ भी मामले को साझा करें। इस मौके पर एसडीएम सुधीर बेक सहित बैंक अधिकारी उपस्थित रहे।

पति शादी में नहीं ले गया, महिला ने जहर खाया

विवाहिता ने जान दी, तीन साल पहले हुई थी शादी

मीडिया ऑडीटर, मऊ/चित्रकूट (निप्र)। चित्रकूट के मऊ थाना क्षेत्र में एक दुखद घटना सामने आई, जहां एक युवा महिला ने पारिवारिक विवाद के चलते जहर खाकर अपनी जान दे दी। मृतका की पहचान निशा देवी (22) के रूप में हुई है, जो ग्राम सुरौधा की निवासी थी।

घटना की जानकारी के अनुसार, निशा के पति आशीष कुमार को किसी रिश्तेदार की शादी में जाना था। निशा भी उनके साथ जाने के लिए तैयार थी, लेकिन आशीष ने उन्हें साथ ले जाने से मना कर दिया। इस बात से नाराज होकर निशा ने जहरीला पदार्थ खा लिया।

डॉक्टर ने मृत घोषित किया: परिजनों ने तुरंत निशा को मऊ सीएससी में भर्ती कराया, जहां से डॉक्टरों ने उन्हें अन्य अस्पताल रेफर कर दिया। दुर्भाग्यवश, रास्ते में ही उनकी मृत्यु हो गई। मऊ थाना प्रभारी विनोद कुमार राय ने बताया कि पंचनामा भरकर शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है।

तीन साल पहले हुई शादी के बाद निशा एक साल की बच्ची की मां बनी थी। थाना प्रभारी ने यह भी बताया कि यदि मृतका के परिजन तहरीर देंगे तो आवश्यक कार्रवाई की जाएगी। यह घटना पारिवारिक कलह के गंभीर परिणामों को दर्शाती है।

स्कूल बसों में बच्चों के सुरक्षित आवागमन के लिए निर्देशों का सख्ती से पालन करें

कलेक्टर ने स्कूल प्रबंधक और संचालकों को दिये निर्देश

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। कलेक्टर अनुराग वर्मा ने स्कूल बसों में बच्चों के सुरक्षित आवागमन के लिए माननीय उच्चतम न्यायालय द्वारा दिये गये निर्देशों के परिपालन में शासन के निर्देशों का सख्ती से पालन सुनिश्चित करने के निर्देश दिये है। गुरूवार को कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में जिले के बस आपरेटर, स्कूल संचालक एवं प्रबंधकों की बैठक में यह निर्देश दिये गये। कलेक्टर ने कहा कि इन निर्देशों में बस आपरेटर, स्कूल प्रबंधन, शिक्षा विभाग, बच्चों के अभिभावक, पुलिस एवं परिवहन विभाग की भूमिका का निर्धारण किया गया है। इस मौके पर आरटीओ संजय श्रीवास्तव, जिला शिक्षा अधिकारी टीपी सिंह, डीएसपी ट्रैफिक संजय खरे भी उपस्थित थे।

कलेक्टर ने कहा कि माननीय उच्चतम न्यायालय एवं राज्य शासन के निर्देशों का सख्ती से पालन सुनिश्चित किया जाये। बच्चों की सुरक्षा स्कूल प्रबंधन, बस संचालक, अभिभावकों सहित सब की जिम्मेदारी है। अनुबंधित बसों के अलावा बच्चों को लाने ले जाने वाले ओमनी वैन और ऑटो रिक्शा में बच्चों के सुरक्षित आवागमन की जिम्मेदारी स्कूल संचालक, प्रबंधन के साथ हम सब की है। स्कूल प्रबंधन कर्मचारियों की डयूटी लगाकर समुचित रूप से निगरानी कराये। कलेक्टर ने कहा कि जारी निर्देशों के अनुसार स्कूल बसें निर्धारित मापदण्डों के अनुसार ही संचालित की जाये। बसें 12 वर्ष से पुरानी नहीं होनी चाहिए और इनमें सीसीटीवी कैमरा, पेनिक बटन, जीपीएस सिस्टम आदि सम्पूर्ण व्यवस्था रहनी चाहिए। छात्राओं की बसों में एक लेडीज टीचर का होना अनिवार्य होगा। प्रत्येक स्कूल में शाला परिवहन समन्वय समिति गठित की जाये। छात्रों के परिवहन में उपयोग में लाये जाने वाले वाहन जारी गाइडलाइन का पालन अनिवार्य रूप से कर रहे है। इस बात को सुनिश्चित करने का दायित्व स्कूल प्रबंधन का होगा। इसमें किसी भी प्रकार की लापरवाही पर स्कूल प्रबंधन पर वैधानिक कार्यवाही की जायेगी।

आरटीओ संजय श्रीवास्तव ने स्कूल बसों में बच्चों को सुरक्षित आवागमन के लिए राज्य शासन द्वारा जारी दिशा-निर्देशों की जानकारी देते हुए बताया कि शिक्षा विभाग के अधिकारियों द्वारा भी समय-समय पर स्कूल का निरीक्षण कर शाला प्रबंधकों से रिपोर्ट ली जायेगी। बसों में पर्याप्त संख्या में पेनिक बटन लगे होना चाहिए और ओमनी तथा अन्य वाहनों में एलपीजी का उपयोग नहीं किया जाना चाहिए। ऐसी सूचना मिलने पर तत्काल पुलिस को सूचित करें। आरटीओ ने कहा कि स्कूल बसों के मामले में सतना समृद्ध जिला है। यहां स्कूल बसें अच्छी स्थिति में है तथा लगभग सभी स्कूल बसें तय मानदण्डों का पालन भी कर रही है।

डीएसपी ट्रैफिक संजय खरे ने कहा कि अनुबंधित बसों और वाहनों के अलावा ओमनी और ऑटो से स्कूल आने वाले छात्रों की सुरक्षा की जिम्मेदारी भी स्कूल प्रबंधन की होगी। वाहनों में ओव्हर लोडिंग नहीं हो, सुरक्षित रहे और एलपीजी से वाहन नहीं चलने चाहिए। उन्होंने कहा कि बाजार में स्कूल की बडी बसों के बजाय छोटे वाहनों का उपयोग करें इससे यातायात का दबाब कम होगा। स्कूल प्रबंधक एक साथ सभी बसों को मुख्य सडक की ओर रवाना नहीं करें बल्कि क्रमशः रवानगी करें। जिला शिक्षा अधिकारी टीपी सिंह ने कहा कि जिले के सभी 6 सी.एम. राइज स्कूलों में स्कूल बसों का संचालन प्रारंभ हो गया है। इन शासकीय स्कूलों सहित सभी शैक्षणिक संस्थाओं में निर्धारित मापदण्डों और दिशा-निर्देशों का पालन सुनिश्चित किया जाये।

राज्यमंत्री प्रतिमा बागरी और मैहर में राधा सिंह करेंगी ध्वजारोहण

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। राज्य शासन के निर्णय अनुसार 26 जनवरी 2025 गणतंत्र दिवस के जिला स्तरीय समारोह में ध्वजारोहण के लिए मुख्य अतिथि तय कर दिये गये है। सतना जिला मुख्यालय के पुलिस परेड ग्राउंड में आयोजित गणतंत्र दिवस समारोह में नगरीय विकास एवं आवास राज्यमंत्री प्रतिमा बागरी और मैहर जिला मुख्यालय के अलाउद्दीन खां स्टेडियम में आयोजित गणतंत्र दिवस समारोह में पंचायत एवं ग्रामीण विकास राज्यमंत्री तथा प्रभारी मंत्री राधा सिंह ध्वजारोहण कर परेड की सलामी लेंगी।

स्वत्वाधिकारी मुद्रक प्रकाशक संदीप द्विवेदी द्वारा मीडिया प्रकाशन रीवा से मुद्रित कर मीडिया ऑडीटर कार्यालय प्रभात बिहार कॉलोनी सतना से प्रकाशित, संपादक संदीप द्विवेदी आर.एन.आई नं.एमपीएचआईएन/2021/81683
प्रधान कार्यालय रीवा (सिटी कार्यालय चक्रधर सिटी सेंटर रीवा) फोन. नं. 9407132714, 7974467831 Mediaauditor1@gmail.com पीआरबी एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार, सभी विवादो का न्याय क्षेत्र रीवा होगा।